



श्रमसाधना



हम बनेंगे आपकी आवाज
रकें करें और वैनल से जुड़े

shramsadhnagwl@gmail.com

श्रम की शक्ति, राष्ट्र की प्रगति

www.shramsadhnagnews.com

साप्ताहिक

वर्ष : 52, अंक : 42 ज्वालियर, रविवार 18 अक्टूबर 2026

डाक पंजीयन

RNI रजि. क्र. 45334/74

विक्रम संवत् 2083 पृष्ठ 12, मूल्य 1 रुपया

डाक L-2-13/समा.पत्र/पं. 40020250/22-23

आडवाणी को सीने में संक्रमण आईसीयु में भर्ती, हालत स्थिर

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और देश के पूर्व उप-प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी को सीने में संक्रमण के कारण दिल्ली के इंदिरा गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

उनके हेल्थ को लेकर अस्पताल की ओर से एक बुलेटिन जारी किया गया है। इसके मुताबिक उन्हें फिलहाल गहन चिकित्सा इकाई (ICU) में रखा गया है। उनकी हालत स्थिर बताई गई है।

श्री रामलीला चल समारोह 20 को

ग्वालियर, जीएनएस।

श्री रामलीला समारोह समिति (रजि.) लखर, ग्वालियर द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री रामलीला चल समारोह बड़े ही उत्साह और उमंग के साथ निकाला जाएगा। संस्था के अध्यक्ष श्री राधेश्याम भाकर, स्वागताध्यक्ष श्री मयंक गर्ग, श्री रामलीला संयोजक श्री रमेश अग्रवाल (पूर्व विधायक), कार्यकारी अध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश मिश्रा, श्री विजय गर्ग एवं कोषाध्यक्ष श्री राजकुमार गुप्ता ने बताया कि चल समारोह के सुव्यवस्थित संचालन हेतु आयोजन समिति में चल समारोह संयोजक के रूप में श्री रामनारायण मिश्रा एवं श्री संजय कट्टल को नियुक्त किया गया है। चल समारोह 20 अक्टूबर को अचलेश्वर महादेव मंदिर से प्रारंभ होकर इंद्रगंज चौराहा, दाल बाजार, नया बाजार, लोहिया बाजार, ऊंट पुल, पाटनकर बाजार, दौलतगंज, महाराज बाड़ा, सराफा बाजार, डीडवाना ओली, गस्त का ताजिया, फालका बाजार, छप्पर वाला पुल होते हुए शिंदे की छावनी से फूलबाग मैदान पहुंचेगा।

कोटा में एक्सप्रेस वे पर हादसा : मृतक और घायल मध्यप्रदेश के बैतूल के निवासी, खाटूश्यामजी दर्शन के लिए जा रहे थे

नाले में गिरी मिनी बस, मप्र के 8 की मौत

कोटा जीएनएस

राजस्थान के कोटा में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर शनिवार सुबह भीषण सड़क हादसे में आठ लोगों की मौत हो गई, जबकि 17 लोग घायल हो गए। मध्यप्रदेश के बैतूल निवासी यात्रियों से भरी ट्रैवलर मिनी बस सिमलिया थाना क्षेत्र में कराड़िया टोल के पास पुलिया से करीब 15 फीट नीचे नाले में गिर गई। सभी यात्री खाटूश्यामजी के दर्शन के लिए जा रहे थे। मृतकों में बस चालक भी शामिल है। पुलिस के अनुसार, ट्रैवलर भोपाल से शुक्रवार शाम करीब सात बजे खाना हुई थी। शनिवार सुबह करीब छह बजे कोटा शहर से लगभग 35 किलोमीटर दूर हादसा हुआ। आशंका जताई जा रही है कि चालक को झपकी आने से वाहन अनियंत्रित होकर पुलिया से नीचे गिर गया। हालांकि, हादसे के वास्तविक कारणों की जांच की जा रही है।



जा रही है।

खिड़कियों के कांच तोड़कर बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया गया। कोटा के न्यू मेडिकल कॉलेज अस्पताल में घायलों का उपचार किया गया। चिकित्सकों के अनुसार, कई घायलों के सिर में गंभीर चोटें आई हैं, जबकि कुछ के हाथ-पैर में फ्रैक्चर हुए हैं। अस्पताल में कुछ घायलों को सीपीआर और ऑक्सीजन सपोर्ट भी दिया गया। सभी मृतकों की पहचान अस्पताल प्रबंधन के

अनुसार, हादसे में अरुणा, वैष्णवी, त्रिशा, कृष्णा, अनिता, ओम सूर्यवंशी और राजू की मौत हुई। बस चालक सहित कुल आठ लोगों की जान गई। इनमें सात लोगों की मौत पर ही मौत हो गई थी, जबकि एक घायल ने अस्पताल में उपचार के दौरान दम तोड़ दिया।

पुलिस के अनुसार, बस में सवार यात्री आपस में रिश्तेदार थे और राजस्थान के चार दिवसीय दौरे पर निकले थे। उनकी यात्रा के पहले दिन खाटूश्यामजी के दर्शन का कार्यक्रम था।

ओम बिरला ने घायलों से की मुलाकात : लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने अस्पताल पहुंचकर घायलों से मुलाकात की। उन्होंने कहा कि हादसे की जांच कराई जा रही है। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे सहित अन्य राजमार्गों पर सड़क सुरक्षा के लिए अध्ययन किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कोटा में हुई दुर्घटना पर गहन दुःख व्यक्त किया

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को कोटा में भोपाल से खाटू श्यामजी जा रही एक मिनी बस के दुर्घटनाग्रस्त होने से हुई जनहानि पर गहन दुःख और शोकाकुल परिवारों के प्रति आत्मीय संवेदनाएं व्यक्त की हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने %एक्स% पर कहा कि दुर्घटना अत्यंत ही दुःखद एवं पीड़ादायक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राज्य शासन की ओर से भोपाल एवं बैतूल जिले के निवासी मृतकों के परिजनों को 4-4 लाख रुपये की आर्थिक सहायता के साथ हर संभव सहयोग प्रदान करने के निर्देश अधिकारियों को दिए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से दिवंगतों की आत्मा की शांति एवं शोकाकुल परिजनों को इस असीम दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ईश्वर से घायलों की शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है।

महाराजा अग्रसेन जयंती पर 251 कन्याओं का पूजन

भोज कराकर दिया सामाजिक समरसता का संदेश



अलीगढ़, जीएनएस

श्री अग्रसेन सेवा समिति की ओर से महाराजा अग्रसेन जी की 5150वीं जयंती हर्षोल्लास और धूमधाम के साथ मनाई गई। इस अवसर पर विष्णुपुरी स्थित गृह निर्माण कन्या इंटर कॉलेज में 251 कन्याओं का भव्य पूजन एवं कन्या भोज आयोजित किया गया। कार्यक्रम में श्रद्धा और उत्साह के साथ कन्याओं का पूजन कर उनका आशीर्वाद लिया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में महामंडलेश्वर पूर्णानंद महाराज और पूर्व विधायक विवेक बंसल ने महाराजा अग्रसेन जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं

दीप प्रज्वलन करके किया। समारोह को संबोधित करते हुए गुरुदेव पूर्णानंद महाराज ने महाराजा अग्रसेन जी के आदर्शों, समाजवाद के सिद्धांतों और जनहित में किए

गए कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने समिति की ओर से किए जा रहे सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों की सराहना की। विशिष्ट अतिथि विवेक बंसल ने भी आयोजन की प्रशंसा

करते हुए समिति की सेवा भावना को सराहा। समिति के अध्यक्ष विनय अग्रवाल ने बताया कि भारतीय संस्कृति और परंपरा के अनुरूप सभी 251 कन्याओं को चुनरी ओढ़ाकर, तिलक लगाकर और चरण पूजन कर उनका आशीर्वाद लिया गया। इसके बाद कन्याओं को स्वादिष्ट भोजन कराया गया और उपहार स्वरूप लंच बॉक्स भेंट किए गए।

कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य अतिथियों ने भी कन्या पूजन में सहभागिता की। समिति के महामंत्री आशीष अग्रवाल ने अतिथियों का

पटका पहनाकर स्वागत एवं सम्मान किया। आयोजन को सफल बनाने में अनिल अग्रवाल सेंचुरी, मनीष अग्रवाल वृत्त, पराग मित्तल, चेतन गोयल, अशोक गर्ग ठेकेदार, हरिशंकर अग्रवाल, प्रदीप अग्रवाल मिल्क बार, अनिल अग्रवाल, डी.के. अग्रवाल, विशाल गर्ग बीडीके, संदीप गर्ग, पवन मोरनी, सौरभ बाल जीवन, हिमांशु मित्तल और नीरज अग्रवाल कोल्ड का विशेष सहयोग रहा जबकि इस कार्यक्रम के संयोजन में गौरव अग्रवाल राधे, सिद्धार्थ मित्तल, ऋषभ बंसल, अभिषेक अग्रवाल और दीपांशु अग्रवाल सहित अन्य सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्कूल, आंगनवाड़ी और राशन दुकान का निरीक्षण कर ली जानकारी

जन विश्वास अभियान अंतर्गत ग्राम सदा और अड़ोखर में पहुंचे नवागत कलेक्टर

भिण्ड, जीएनएस।

जन विश्वास अभियान के तहत नवागत कलेक्टर श्री पवन कुमार जैन ने शुक्रवार को विकासखंड मेहगांव के ग्राम सदा और अड़ोखर का भ्रमण किया। उन्होंने ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं तथा शासकीय संस्थाओं की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान शिक्षा, पोषण, राशन वितरण, स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं

की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया गया।

स्कूलों में शिक्षण की जांच

कलेक्टर ने ग्राम सदा स्थित शासकीय प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों का निरीक्षण किया। उन्होंने विद्यार्थियों व शिक्षकों की उपस्थिति, दर्ज संख्या तथा मध्याह्न भोजन की मीनू अनुसार व्यवस्था की जांच की।

बच्चों से संवाद कर उनका

शैक्षणिक स्तर जाना गया।

कलेक्टर ने बच्चों से पूछा कि वे पढ़-लिखकर क्या बनना चाहते हैं और शिक्षकों को बेहतर शिक्षा देने के निर्देश दिए। रसोई में तैयार मध्याह्न भोजन का अवलोकन कर उसकी गुणवत्ता भी देखी।

आंगनवाड़ी और राशन दुकान का निरीक्षण

कलेक्टर ने आंगनवाड़ी केंद्र मोहर सिंह का पुरा (सदा) में दर्ज बच्चों की संख्या, उपस्थिति

तथा बच्चों को दिए जाने वाले पोषिक आहार की जानकारी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता व सहायिका से ली। उन्होंने केंद्र की व्यवस्थाओं का भी निरीक्षण किया।

शासकीय उचित मूल्य की दुकान में हितग्राहियों की संख्या और वितरित हो रहे राशन की गुणवत्ता की जांच की। कलेक्टर ने सीईओ जनपद मेहगांव तथा ग्राम पंचायत सचिव को स्कूल व आंगनवाड़ी केंद्र के आसपास

साफ-सफाई सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए।

आरोग्य केंद्र में सुविधाओं का जायजा

ग्राम अड़ोखर में कलेक्टर ने आयुष्मान आरोग्य मंदिर का निरीक्षण किया। उन्होंने स्टाफ की उपस्थिति और दवाइयों की उपलब्धता की जानकारी ली।

केंद्र संचालक को ग्राम पंचायत सचिव से समन्वय स्थापित कर आरोग्य केंद्र के आसपास साफ-सफाई कराने के

निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, पोषण, राशन, स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाए।

इस दौरान पुलिस अधीक्षक श्री सुरज कुमार वर्मा, सीईओ जिला पंचायत श्री वीरसिंह चौहान, अपर कलेक्टर श्री राजन बी नाडिया, एसडीएम मेहगांव श्री नवनीत शर्मा, सीईओ जनपद मेहगांव श्री राजीव मिश्रा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

शारदीय नवरात्रि 2026 में मां दुर्गा की आराधना के साथ उनकी उस कथा को जानना भी खास है, जिसमें देवी ने अत्याचारी महिषासुर का सामना किया था। पौराणिक मान्यता के अनुसार, महिषासुर को अपनी शक्ति पर इतना घमंड था कि वह देवताओं को भी परेशान करने लगा था। जिसके बाद देवताओं को मां दुर्गा का आह्वान करना पड़ा? आइए जानते हैं, मां दुर्गा और महिषासुर के बीच यह युद्ध कितने दिनों तक चला था और इसका अंत किस दिन हुआ?

मां दुर्गा और महिषासुर के बीच कितने दिन चला युद्ध?

लोकप्रिय धार्मिक मान्यता के अनुसार, मां दुर्गा और महिषासुर के बीच नौ दिनों तक भयंकर युद्ध हुआ था और दसवें दिन देवी ने उसका वध किया। इसी मान्यता को शारदीय नवरात्रि और विजयादशमी से जोड़कर देखा जाता है। हालांकि, देवी महात्म्य में युद्ध के बारे में विस्तार से बताया गया है, जबकि नौ दिन और दसवें दिन वध का

संबंध प्रचलित धार्मिक परंपरा में विशेष रूप से बताया जाता है।
क्यों हुआ था मां दुर्गा और महिषासुर के बीच युद्ध?

पौराणिक कथा के अनुसार, महिषासुर एक शक्तिशाली असुर था। उसने कठोर तपस्या करके ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त किया था। वरदान के कारण उसका अहंकार बढ़ गया और उसने देवताओं को परेशान करना शुरू कर दिया। महिषासुर के अत्याचारों से परेशान होकर देवता भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु और भगवान शिव के पास पहुंचे। देवताओं की परेशानी दूर करने के लिए सभी देवताओं की शक्तियों से देवी दुर्गा का प्राकट्य हुआ। देवी को विभिन्न देवताओं ने दिव्य अस्त्र-शस्त्र प्रदान किए। सिंह पर सवार मां दुर्गा ने महिषासुर को चुनौती दी और उसके अत्याचारों का अंत करने के लिए युद्ध शुरू किया।

देवी महात्म्य में क्या बताया गया है?

देवी महात्म्य, जिसे दुर्गा सप्तशती के नाम से भी जाना जाता है, मार्कंडेय पुराण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें देवी की शक्ति, महिषासुर के साथ युद्ध और

जानें देवी महात्म्य की कथा

मां दुर्गा ने महिषासुर को मारने के लिए कितने दिन तक किया युद्ध?



महिषासुर से कितने दिन लड़ी थी मां दुर्गा?

अंत में उसके वध का विस्तार से बताया गया है। कथा के अनुसार, महिषासुर युद्ध के दौरान बार-बार अपना रूप बदलता था। कभी वह भैंसे का रूप धारण करता, तो कभी दूसरे रूपों में देवी को चुनौती देता। देवी दुर्गा ने उसके हर रूप का सामना किया। आखिर में देवी ने उसे पराजित कर उसका वध कर

दिया और देवताओं को उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाई। इस कथा में मां दुर्गा को शक्ति, साहस और धर्म की रक्षा करने वाली देवी के रूप में दर्शाया गया है।

नवरात्रि और विजयादशमी से क्या है संबंध?

नवरात्रि के नौ दिन मां दुर्गा

की आराधना के लिए समर्पित माने जाते हैं। भक्त इन दिनों व्रत रखते हैं, दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं और देवी के अलग-अलग स्वरूपों की पूजा करते हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार, ये नौ दिन देवी की शक्ति और महिषासुर पर उनकी विजय की याद दिलाते हैं। दसवें दिन विजयादशमी मनाई जाती है,

जिसे दशहरा भी कहा जाता है। इस दिन को बुराई पर अच्छाई और अन्याय पर न्याय की जीत का प्रतीक माना जाता है। देश के कई हिस्सों में रावण दहन किया जाता है, जबकि मां दुर्गा की आराधना से जुड़े क्षेत्रों में देवी की विजय और दुर्गा प्रतिमा के विसर्जन की परंपरा भी निभाई जाती है।

शारदीय नवरात्रि में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा करने के साथ दुर्गा सप्तशती के पाठ को भी विशेष महत्व दिया जाता है। मान्यता है कि दुर्गा सप्तशती का पाठ भक्तों को मां दुर्गा की महिमा, शक्ति और बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश देता है। इस पाठ की शुरुआत से पहले देवी कवच, अर्गला स्तोत्र और कीलक स्तोत्र का पाठ करने की परंपरा है। इन तीनों स्तोत्रों को दुर्गा सप्तशती के महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। अक्सर कई श्रद्धालु सीधे प्रथम चरित्र या अध्याय से पाठ शुरू कर देते हैं, जबकि शास्त्रों के अनुसार, दुर्गा सप्तशती के मुख्य पाठ से पहले देवी कवच, अर्गला स्तोत्र और कीलक स्तोत्र का पाठ करना जरूरी है। आइए जानते हैं, आखिर इन तीनों का नवरात्रि में इतना गहरा महत्व क्यों है?

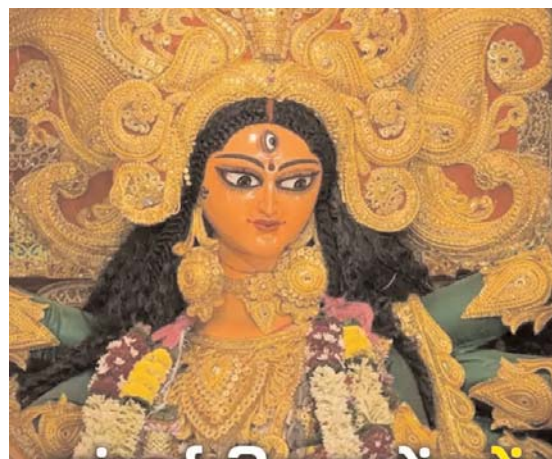
देवी कवच, अर्गला और कीलक स्तोत्र नवरात्रि में क्यों है इनका विशेष महत्व?

देवी कवच

देवी कवच को दुर्गा सप्तशती का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। कवच का सामान्य अर्थ सुरक्षा देने वाला आवरण होता है। इस स्तोत्र में मां दुर्गा के अलग-अलग स्वरूपों का स्मरण करते हुए शरीर के विभिन्न अंगों की रक्षा के लिए प्रार्थना की जाती है। नवरात्रि में देवी कवच का पाठ करने के पीछे मान्यता है कि मां दुर्गा अपने भक्तों को भय, संकट और नकारात्मक परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति देती हैं। भक्त इस पाठ के माध्यम से अपने जीवन में सुख, शांति और सुरक्षा की कामना करते हैं। इसे केवल बाहरी संकटों से बचाव की प्रार्थना के रूप में ही नहीं, बल्कि मन में साहस और आत्मविश्वास जगाने वाली स्तुति के रूप में भी देखा जाता है।

अर्गला स्तोत्र

अर्गला स्तोत्र दुर्गा सप्तशती के पाठ से पहले पढ़े जाने वाले प्रमुख स्तोत्रों में से एक है। इसमें मां दुर्गा की महिमा का गुणगान करते हुए उनसे रूप, विजय, यश और



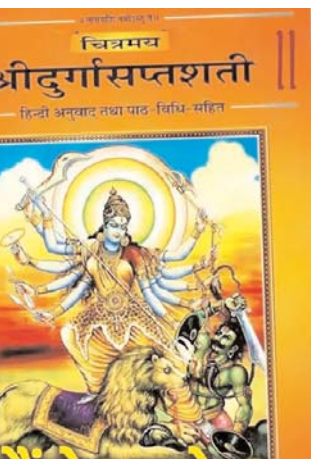
मां दुर्गा की पूजा में क्यों खास हैं ये 3 स्तोत्र?

सफलता जैसी कामनाओं के लिए प्रार्थना की जाती है। नवरात्रि के दौरान भक्त अपने जीवन की परेशानियों को दूर करने, परिवार में सुख-समृद्धि बनाए रखने और कार्यों में सफलता पाने की कामना से इसका पाठ करते हैं। अर्गला स्तोत्र में बार-बार आने वाली प्रार्थना भक्त और देवी के बीच श्रद्धा के भाव को व्यक्त करती है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस

स्तोत्र का पाठ भक्त को अपनी इच्छाओं और मनोकामनाओं के लिए मां के सामने प्रार्थना करने का अवसर देता है। हालांकि, इसे किसी इच्छा की पूर्ति की गारंटी के रूप में नहीं देखना चाहिए।

कीलक स्तोत्र

कीलक स्तोत्र का नाम सुनकर कई लोगों के मन में सवाल आता है कि इसका अर्थ



क्या है और इसे दुर्गा सप्तशती से पहले क्यों पढ़ा जाता है। कीलक शब्द का सामान्य अर्थ कील या किसी चीज को बांधकर रखने वाला अवरोध माना जाता है। दुर्गा सप्तशती की परंपरा में इस स्तोत्र को पाठ के महत्वपूर्ण अंग के रूप में शामिल किया गया है। धार्मिक व्याख्याओं के अनुसार, कीलक स्तोत्र का पाठ दुर्गा सप्तशती के मंत्रों के महत्व और उनके फल से जुड़ी परंपरा को समझने का माध्यम है। इसे देवी कवच और अर्गला स्तोत्र के बाद पढ़ा जाता है।



संकल्प और सेवाभाव के साथ राष्ट्र निर्माण में संलग्न प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

गोविन्द सिंह राजपूत

भारतीय राजनीति में 25 वर्षों का सार्वजनिक जीवन और शासन का अनुभव अपने आप में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। 7 अक्टूबर 2001 को गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शुरू हुई नरेंद्र मोदी की शासन-यात्रा आज 25 वर्ष पूरे कर चुकी है। गुजरात से शुरू हुआ यह



सफर 2014 में देश के प्रधानमंत्री पद तक पहुँचा और उसके बाद राष्ट्रीय विकास की एक व्यापक दृष्टि के साथ आगे बढ़ा। नरेंद्र मोदी की इस यात्रा को केवल पदों और चुनावी पड़ावों के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। यह यात्रा एक ऐसे राजनीतिक दृष्टिकोण के विकास की कहानी भी है, जिसमें शासन, विकास, तकनीक, आत्मनिर्भरता और जनभागीदारी को लगातार महत्व दिया गया। गुजरात में मुख्यमंत्री के रूप में मिले प्रशासनिक अनुभव से लेकर केंद्र में प्रधानमंत्री के रूप में लिए गए निर्णयों तक, उनकी राजनीति में विकास को एक प्रमुख विषय के रूप में प्रस्तुत किया गया।

गुजरात का दौर उनके लिए प्रशासन की पहली बड़ी प्रयोगशाला रहा। 2001 में राज्य की कमान संभालने के बाद बुनियादी ढाँचे, कृषि, निवेश, ऊर्जा और प्रशासनिक व्यवस्था जैसे क्षेत्रों पर जोर दिया गया। समर्थकों

ने गुजरात के इस दौर को विकास और प्रशासनिक बदलाव से जोड़ा, जबकि आलोचकों ने शासन से जुड़े विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर सवाल भी उठाए। यही कारण है कि गुजरात का दौर आज भी उनके राजनीतिक सफर को समझने में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

2014 में नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद गुजरात से जुड़ा उनका विकास-केंद्रित राजनीतिक अनुभव राष्ट्रीय स्तर पर सामने आया। जन-धन, स्वच्छ भारत, डिजिटल इंडिया, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण, बुनियादी ढाँचे के विस्तार, मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे कार्यक्रमों ने शासन और विकास की बहस को नए विषय दिए। डिजिटल तकनीक और डिजिटल सार्वजनिक अवसर-रचना ने भी सरकारी सेवाओं को नागरिकों तक पहुँचाने के तरीके में महत्वपूर्ण बदलाव किए।

2019 में दूसरी बार और 2024 में तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के साथ उनकी राष्ट्रीय राजनीतिक यात्रा एक नए चरण में पहुँची। इन वर्षों में भारत की वैश्विक भूमिका, बुनियादी ढाँचा, विनिर्माण, रक्षा उत्पादन, अंतरिक्ष, डिजिटल तकनीक, नवीकरणीय ऊर्जा और स्टार्टअप जैसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिखाई दिया। इन नीतियों के प्रभाव और परिणामों का मूल्यांकन समय के

साथ विभिन्न आर्थिक और सामाजिक मानकों पर होता रहेगा लेकिन 25 वर्ष की इस यात्रा का सबसे बड़ा विमर्श अब 2047 से जुड़ गया है।

भारत 2047 में स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस अवसर तक भारत को 'विकसित भारत' बनाने का लक्ष्य सामने रखा है। इस विजन में केवल आर्थिक समृद्धि ही नहीं, बल्कि आधुनिक बुनियादी ढाँचा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य, तकनीकी क्षमता, महिला सशक्तीकरण, युवा शक्ति, कृषि विकास, रोजगार, आत्मनिर्भरता और पर्यावरणीय संतुलन जैसे व्यापक विषय शामिल हैं। प्रधानमंत्री ने इस लक्ष्य को नागरिकों की सामूहिक भागीदारी से जोड़ते हुए विकसित भारत के निर्माण को एक राष्ट्रीय प्रयास के रूप में प्रस्तुत किया है।

2047 का भारत आज के भारत से कहीं अधिक युवा, तकनीकी और वैश्विक रूप से जुड़ा हुआ होगा। इसलिए आज लिए जा रहे फैसलों का प्रभाव आने वाली पीढ़ियों पर पड़ेगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर, डिजिटल तकनीक, हरित ऊर्जा, आधुनिक परिवहन, अंतरिक्ष विज्ञान और विनिर्माण जैसे क्षेत्र आने वाले भारत की आर्थिक और रणनीतिक क्षमता को निर्धारित करेंगे। ऐसे में 'विकसित भारत 2047' का लक्ष्य केवल सरकार की योजनाओं तक

सीमित नहीं रह सकता, इसके लिए उद्योग, किसान, वैज्ञानिक, शिक्षक, युवा, महिलाएँ और सामान्य नागरिक सभी की भागीदारी आवश्यक होगी।

इस विजन में भारत की पुरानी विरासत और आधुनिकता को साथ लेकर चलने का विचार भी महत्वपूर्ण है। एक ऐसा भारत जो अपनी संस्कृति, परंपरा और ज्ञान की जड़ों से जुड़ा हो, लेकिन विज्ञान, तकनीक और नवाचार में दुनिया के साथ कदम मिलाकर चले। विकास और विरासत का यह संतुलन 2047 की कल्पना को एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम देता है।

25 वर्ष पीछे मुड़कर देखने पर नरेंद्र मोदी की राजनीतिक यात्रा गुजरात से दिल्ली तक पहुँचती दिखाई देती है, लेकिन आगे देखने पर इसका लक्ष्य 2047 का भारत है। 2001 में शुरू हुई जिम्मेदारी से लेकर आज विकसित भारत के संकल्प तक यह यात्रा भारतीय राजनीति और शासन के एक लंबे दौर को समेटे हुए है।

अब इस यात्रा की अगली कसौटी आने वाले वर्षों में तय होगी, लेकिन एक बात स्पष्ट है, 2047 का भारत आज के भारत के फैसलों से बनेगा। इसलिए विकसित भारत का सपना केवल भविष्य की कल्पना नहीं, बल्कि वर्तमान की जिम्मेदारी भी है।

नरेंद्र मोदी की 25 वर्ष की राजनीतिक यात्रा का अगला

अध्याय इसी जिम्मेदारी और संकल्प से जुड़ा है। गुजरात से शुरू हुआ सफर अब उस भारत की कल्पना तक पहुँच चुका है, जो 2047 में अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मनाते हुए दुनिया के सामने एक विकसित, आत्मनिर्भर, आधुनिक और अपनी जड़ों से जुड़ा राष्ट्र बनने का प्रयास करेगा। संकल्प आज का है, निर्माण आज से होना है और लक्ष्य, विकसित भारत 2047।

25 वर्षों की यह राजनीतिक यात्रा केवल बीते समय का लेखा-जोखा नहीं, बल्कि आने वाले भारत की दिशा को समझने का अवसर भी है। 2001 में गुजरात से शुरू हुई जिम्मेदारी आज 2047 के उस संकल्प तक पहुँच चुकी है, जहाँ भारत अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी एक विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में मनाने की आकांक्षा रखता है। इस यात्रा में अनेक उपलब्धियाँ हैं, अनेक चुनौतियाँ रही हैं और अनेक निर्णयों पर देश में बहस भी हुई है, लेकिन 2047 का लक्ष्य इतना व्यापक है कि इसकी सफलता किसी एक व्यक्ति या सरकार से नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र के सामूहिक प्रयास से तय होगी।

आज का भारत जिस आत्मविश्वास के साथ नई तकनीक, नवाचार, बुनियादी ढाँचे, विनिर्माण, अंतरिक्ष, डिजिटल अर्थव्यवस्था और वैश्विक मंच पर अपनी भूमिका

को आगे बढ़ाने की बात कर रहा है, उसके सामने अगले दो दशक अवसरों के साथ-साथ बड़ी जिम्मेदारियाँ भी लेकर आए हैं। करोड़ों युवाओं की ऊर्जा, महिलाओं की भागीदारी, किसानों की शक्ति, उद्यमियों की कल्पनाशीलता और वैज्ञानिकों की प्रतिभा इस यात्रा की वास्तविक पूंजी है। इसलिए 2047 का विकसित भारत केवल एक सरकारी लक्ष्य नहीं, बल्कि एक पीढ़ी का राष्ट्रीय संकल्प बनना होगा। 25 वर्ष पहले शुरू हुई राजनीतिक यात्रा का अगला पड़ाव अब केवल सत्ता और शासन तक सीमित नहीं है, वह उस भारत के निर्माण की चुनौती से जुड़ा है, जिसे आने वाली पीढ़ियाँ विरासत में पाएँगी। सवाल अब यह नहीं कि हमने पिछले 25 वर्षों में क्या हासिल किया, बल्कि यह है कि अगले 21 वर्षों में हम भारत के भविष्य को कितना मजबूत, समावेशी और सक्षम बना पाते हैं। और शायद इसी भावना को एक पंक्ति में कहा जा सकता है। 25 वर्षों की यात्रा अनुभव की पूंजी है, 2047 का लक्ष्य भविष्य का संकल्प है, अब इतिहास लिखने की जिम्मेदारी आज के भारत और उसकी आने वाली पीढ़ियों के हाथों में है।

(लेखक मप्र सरकार में खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री हैं।)

प्रधानमंत्री आवास योजना से अफसाना और संजय खां को मिला पक्का मकान

खुशियों की दास्तां: ग्राम सपाड़ की दंपति को शासकीय योजनाओं ने दिया सम्मानजनक जीवन

भिण्ड, जीएनएस।

भिण्ड जिले के ग्राम सपाड़ निवासी अफसाना और संजय खां के जीवन में विभिन्न शासकीय योजनाओं ने आत्मसम्मान और स्वाभिमान के रंग भर दिए हैं, जिनसे इनका जीवन आसान और सुरक्षित हो गया है।

संजय खां बताते हैं कि पहले कच्ची मट्टियाँ में बेहद कठिनाइयों से जीवन यापन करते थे, जो बरसात में टपकती थी। प्रधानमंत्री आवास योजना उनके लिए वरदान बनी। योजना के तहत वर्ष 2024-25 में उन्हें पक्का आवास बनाने के लिए



1 लाख 20 हजार रुपए की सहायता राशि और 90 दिन की मजदूरी स्वीकृत हुई। आज उनका अपना पक्का मकान है, जिसमें उनका परिवार सुरक्षित निवास करता है। स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत शौचालय निर्माण के लिए उन्हें 12 हजार रुपए की भी सहायता

मिली। घर के आंगन में बने शौचालय से विशेषकर अफसाना और संतानों को सुविधा मिली और खुले में शौच की मजबूरी और असुरक्षा खत्म हुई। परिवार को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत प्रति व्यक्ति 5 किलो निशुल्क अनाज प्रतिमाह मिल रहा है,

जिससे उनके परिवार की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई है। अफसाना खां के जीवन में शासकीय योजनाएं और स्वाभिमान की नई रोशनी लाई हैं। वे कहती हैं कि प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के अंतर्गत निशुल्क गैस कनेक्शन और सब्सिडी

वाले सिलेंडर मिलने से अब उन्हें धुएँ से मुक्ति मिली है और रसोई का काम आसान हो गया है। पहले चूल्हे में खाना पकाने में हाथ भी जल जाते थे, लेकिन अब गैस पर स्वादिष्ट खाना पका पाती हैं। इसके अलावा मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना के तहत प्रतिमाह 1500 रुपए मिलने से अफसाना आर्थिक रूप से सशक्त हुई हैं और संतानों की छोटी-छोटी जरूरतें खुद पूरी कर पा रही हैं। संजय मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण करते हैं, लेकिन अब शासन की इन कल्याणकारी योजनाओं के सहारे उनका परिवार आत्मनिर्भर बना है। संजय और अफसाना कहते हैं कि शासकीय योजनाओं ने उनका जीवन खुशहाल बनाया है। वे इस सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।



न्याय मशाल-नवी पिल्लई को नमन...!

जिसने अन्याय के आगे झुकना नहीं सीखा, जिसने अत्याचारों के आगे रुकना न सीखा। मानवता की पीड़ा को अपना दर्द है बनाया, नवी पिल्लई ने देखों न्याय का दीप जलाया। दक्षिण अफ्रीका की धरती से उठी है आवाज़, इसमें साहस, संकल्प और न्याय का आगाज़। रंगभेद की दीवारों से जब इंसानियत कराहती, तब उनके संघर्ष की लौ अधेरों से लड़ जाती। न थी सत्ता की चाहत, न शोहरत का अरमान, उनके लिए सर्वोपरि था मानवता का सम्मान। उसने कानून की ताकत को हथियार बनाकर, हर बार लड़ी वो लड़ाई अन्याय को मिटाकर। न्यायालयों के गलियारों में उनकी पहचान बनी, पीड़ितों की आँखों में उम्मीद की मुस्कान बनी। महिलाओं के अधिकारों की बुलंद आवाज़ रही, कमजोरों के हक में संघर्ष का आगाज़ है सही।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

निष्पक्षता-विश्वसनीयता एवं जनहित का संवाहक

श्रमसाधना

संपादकीय

सनसनी से नहीं, सबूतों से तय होनी चाहिए सच्चाई

बिना प्रमाण गंभीर आरोप लगाना लोकतंत्र, राजनीतिक विमर्श और सार्वजनिक विश्वसनीयता के लिए कितना उचित? यह सवाल अपने आप में ही प्रश्नचिह्न लगा रहा है। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में किसी देश के आंतरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप की आशंका को पूरी तरह खारिज नहीं किया जा सकता। दुनिया के अनेक देशों में राजनीतिक गतिविधियाँ, चुनावी प्रक्रियाओं और जन आंदोलनों पर बाहरी प्रभाव को लेकर समय-समय पर सवाल उठते रहे हैं। लेकिन किसी आशंका को प्रमाणित तथ्य के रूप में प्रस्तुत करना और किसी राजनीतिक दल पर विदेशी धन लेकर देश में अशांति फैलाने का आरोप लगाना दो अलग-अलग बातें हैं। यही अंतर जिम्मेदार पत्रकारिता, निष्पक्ष राजनीतिक विमर्श और लोकतांत्रिक मूल्यों की बुनियाद है।

हाल ही में अमेरिकी गायिका और अभिनेत्री मैरी मिलबेन के नाम से सोशल मीडिया के जरिये सामने आए एक बयान में भारत में सक्रिय एक राजनीतिक दल को अमेरिका से भारी वित्तीय सहायता मिलने का आरोप लगाया गया है। इस दावे में यह भी कहा गया है कि विदेशी धन का इस्तेमाल भारत की आंतरिक शांति को प्रभावित करने, सामाजिक विद्वेष बढ़ाने और केंद्र सरकार के कामकाज में बाधाएं उत्पन्न करने के लिए किया जा रहा है। आरोपों के समर्थन में कुछ व्यक्तियों और कथित वित्तीय समूहों का भी उल्लेख किया गया है।

ऐसे गंभीर आरोप सामने आने के बाद सबसे महत्वपूर्ण सवाल यही है कि इन दावों के समर्थन में ठोस सबूत क्या हैं? क्या किसी बैंक खाते का विवरण सामने आया है? क्या किसी वित्तीय लेन-देन का दस्तावेज उपलब्ध है? क्या संबंधित एजेंसी ने कोई जांच की है? क्या किसी विश्वसनीय जांच रिपोर्ट या आधिकारिक दस्तावेज में इन आरोपों की पुष्टि हुई है? यदि इन सवालों के जवाब उपलब्ध नहीं हैं, तो ऐसे बयानों को प्रमाणित समाचार की तरह प्रस्तुत करना उचित नहीं होगा। किसी राजनीतिक दल को विदेशी धन मिलने का आरोप सामान्य राजनीतिक टिप्पणी नहीं है। यह एक गंभीर आरोप है, जिसका संबंध देश की संप्रभुता, राजनीतिक पारदर्शिता और कानून के पालन से जुड़ा है। यदि किसी दल या संगठन को अवैध विदेशी वित्तपोषण प्राप्त हुआ है, तो इसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। दोष सिद्ध होने पर कानून के अनुसार कार्रवाई भी होनी चाहिए। लेकिन जांच से पहले ही किसी संगठन को देशविरोधी गतिविधियों में शामिल घोषित कर देना न्याय के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है। राजनीति में आरोप लगाना आसान है, लेकिन उन्हें प्रमाणित करना कठिन। इसलिए यह आवश्यक है कि आरोप लगाने वाला व्यक्ति अपने दावों के समर्थन में विश्वसनीय दस्तावेज, वित्तीय रिकॉर्ड या अन्य सत्यापन योग्य साक्ष्य प्रस्तुत करे। केवल सोशल मीडिया पोस्ट, राजनीतिक बयान अथवा किसी विदेशी नागरिक की टिप्पणी अपने आप में किसी गंभीर आरोप का प्रमाण नहीं बन जाती। यहां यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि उपलब्ध विवरण के आधार पर मैरी मिलबेन के नाम से प्रसारित आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं मानी जा सकती। जब तक विश्वसनीय साक्ष्य सामने नहीं आते, तब तक इन्हें आरोप या दावा ही कहा जाना चाहिए, स्थापित तथ्य नहीं। लोकतंत्र में राजनीतिक दलों के बीच मतभेद स्वाभाविक हैं। सत्तापक्ष और विपक्ष, दोनों को अपनी विचारधारा रखने, सरकार की नीतियों की आलोचना करने और जनता के सामने अपना पक्ष रखने का अधिकार है।

प्रान्तीय कार्यालय : 76 शबरी कॉम्प्लेक्स, एम.पी. नगर

जोन-2 भोपाल, फोन : 0755-2579530

प्रान्तीय ब्यूरो प्रमुख : एल.एन. तवर, 9827781209

प्रान्तीय ब्यूरो : डॉ. जानकी अहिरवार 9406580345

Email:shramsadhnagwl@gmail.com

कन्या पूजन : जिसे संसार में आने नहीं दिया उसे पूजने निकलेंगे घर-घर

आ गई अष्टमी, आ गई नवमी। घरों में तैयारियां हैं, मंदिरों में घंटियों की गूंज है और मां दुर्गा के दरबार सजे हैं। रसोई में हलवा बन रहा है, पूड़ियां छन रही हैं और छोटी-छोटी बच्चियों के लिए उपहार सजाए जा रहे हैं। लोग सुबह से ही कन्याओं को आमंत्रित करने निकल पड़ते हैं। किसी को नौ कन्याएं चाहिए, किसी को ग्यारह, तो कोई जितनी बच्चियां मिल जाएं, उन्हें देवी का स्वरूप मानकर पूजा चाहता है। छोटी-छोटी बच्चियां घरों में प्रवेश करती हैं। उनके चरण धोए जाते हैं, माथे पर तिलक लगाया जाता है और प्रेमपूर्वक भोजन कराया जाता है। उपहार पाकर वे खिलखिलाती हैं। उन्हें शायद यह भी पता नहीं होता कि आज उन्हें देवी कहा जा रहा है। वे तो बस बच्चियां हैं, मासूम और निश्छल।

लेकिन इसी पवित्र दृश्य के बीच एक सवाल मन में उठता है—क्या आज कन्याओं के चरणों में झुकने वाला हर सिर जीवन में भी बेटी के सम्मान के सामने झुकता है? क्या कन्या पूजन करने वाला हर परिवार अपनी बहू के गर्भ में पल रही बेटी का भी उतने ही उत्साह से स्वागत करेगा?

एक दिन देवी, बाकी दिन बोल कयों? हमारा समाज विचित्र विरोधाभासों से भरा है। एक ओर हम मां दुर्गा के नौ रूपों की आराधना करते हैं, कन्याओं के चरणों में सिर झुकाते हैं और उनसे सुख-समृद्धि का आशीर्वाद मांगते हैं। दूसरी ओर कहीं बेटी के जन्म पर उदासी छा जाती है। बेटी पैदा हो तो मिठाइयां बांटी जाती हैं, जबकि बेटी के जन्म पर कुछ चेहरों पर चिंता की लकीरें उभर आती हैं।

कहीं दहेज की चिंता होती है, कहीं वंश आगे बढ़ाने की बात कही जाती है, तो कहीं बेटी के पालन-पोषण और

विवाह को आर्थिक बोझ समझ लिया जाता है। इससे भी अधिक पीड़ादायक मानसिकता वह है, जो गर्भ में पल रही बच्ची को संसार देखने का अवसर तक नहीं देना चाहती।

लिंग के आधार पर भ्रूण हत्या केवल एक जीवन की संभावना समाप्त नहीं करती, बल्कि समाज की संवेदनशीलता और मानवीय विवेक पर भी प्रश्न खड़ा करती है। विडंबना देखिए कि जिस बेटी के जन्म से कभी घर का आंगन उदास हो जाता है, उसी बेटी के चरणों में सुख-समृद्धि की कामना लेकर लोग सिर झुकाते हैं।

क्या हमारी आस्था केवल नौ दिनों के लिए जागती है? क्या धर्म के बाहरी स्वरूप को निभाते हुए हम उसके भीतर छिपे जीवन-मूल्यों को भूल जाते हैं?

आईने में चेहरा नहीं, अपनी सोच भी देखिए

कल्पना कीजिए, अष्टमी की सुबह है। एक व्यक्ति ने कन्या पूजन की पूरी तैयारी की है। पूजा की थाली सजी है, हलवा-पूड़ी तैयार है और आंगन में आसन बिछे हैं। बच्चियां आती हैं। उनके चरण धोए जाते हैं, तिलक लगाया जाता है और श्रद्धापूर्वक भोजन कराया जाता है।

तभी उसकी नजर सामने लगे आईने पर पड़ती है। उसे अपना चेहरा दिखाई देता है। वही चेहरा, जिसने कभी बेटी के जन्म की संभावना पर चिंता जताई थी। वही चेहरा, जिसने किसी परिवार में बेटी पैदा होने पर सहानुभूति के नाम पर दुख व्यक्त किया था। या शायद वही चेहरा, जिसने अपनी बहू पर बेटे को जन्म देने का दबाव बनाया था।

क्या आईना केवल चेहरे की झुर्रियां दिखाएगा, या मनुष्य को उसके भीतर छिपे सच से भी परिचित

कराएगा?

जीवन का सबसे कठिन आईना वह है, जिसमें हमें अपना चरित्र दिखाई देता है। माथे पर तिलक हो सकता है, वस्त्र साफ हो सकते हैं और पूजा विधिपूर्वक संपन्न हो सकती है, लेकिन यदि मन में बेटी के प्रति भेदभाव है, तो बाहरी श्रद्धा उस सोच को पवित्र नहीं बना सकती।

कन्या के चरणों में झुकना आसान है, अपनी सोच के अहंकार को झुकाना कठिन। देवी को भोग लगाना आसान है, अपनी बेटी, बहू और पत्नी के अधिकारों का सम्मान करना कठिन। किसी बच्ची को उपहार देना आसान है, उसे जीवनभर सुरक्षित, स्वतंत्र और सम्मानजनक वातावरण देना कठिन।

लेकिन धर्म की वास्तविक परीक्षा वहीं होती है, जहां दिखावे की सुविधा समाप्त होती है और जिम्मेदारी शुरू होती है।

जिसे जन्म नहीं लेने दिया, उसकी कल्पना से भी पूछिए

यदि किसी परिवार ने कभी बेटी को जन्म लेने से रोकने का निर्णय लिया हो, तो कन्या पूजन के समय एक बार सोचिए कि यदि वह बच्ची जन्म लेती, तो आज उसकी उम्र भी इतनी ही होती। उसके भी नन्हे हाथ होते, आंखों में सपने होते और चेहरे पर मुस्कान होती। वह भी मां की गोद में सिर रखकर सोती, पिता की उंगली पकड़कर चलना सीखती और घर के आंगन में खिलखिलाती। वह भी स्कूल जाती, जन्मदिन मनाती, त्योहारों में खुशियां बांटती और अपने परिवार के जीवन में रंग भरती। लेकिन जिस जीवन को संसार में आने का अवसर ही नहीं मिला, उसकी आवाज हम कभी नहीं सुन सकते।

यह विचार किसी को अपराधबोध में डुबोने के लिए नहीं, बल्कि भविष्य

के प्रति सजग करने के लिए है। बीते हुए निर्णय बदले नहीं जा सकते, लेकिन आने वाले निर्णयों में संवेदना, विवेक और समानता को स्थान दिया जा सकता है।

यदि कभी बेटी को लेकर भेदभावपूर्ण विचार रखे हैं, तो उन्हें बदलने का संकल्प लें। यदि किसी परिवार में बेटी के जन्म पर निराशा व्यक्त की है, तो अपनी सोच सुधारें। और यदि समाज में ऐसी मानसिकता दिखाई दे, तो उसके विरुद्ध आवाज उठाएं। परिवर्तन की शुरुआत अपने भीतर झांकने और अपनी गलतियों को स्वीकार करने से होती है।

पूजा के बाद भी जारी रहे सम्मान की परंपरा

कन्या पूजन संपन्न हो जाएगा। बच्चियां भोजन करके अपने घर लौट जाएंगी। पूजा की थाली समेट दी जाएगी, बर्तन धुल जाएंगे और लोग अपने दैनिक कामों में लग जाएंगे। लेकिन उसके बाद भी कोई बेटी पढ़ाई के लिए जगह मांगेगी, कोई अपने सपनों को पूरा करने के लिए परिवार का सहयोग चाहेगी और कोई अपने निर्णयों के सम्मान की अपेक्षा करेगी।

तब क्या हम उन्हें वही सम्मान दे पाएंगे, जो अष्टमी के दिन देवी को दिया था? यदि उत्तर हां है, तो हमारा कन्या पूजन केवल परंपरा नहीं, संस्कार है। लेकिन यदि पूजा के बाद भी बेटे-बेटी के बीच भेदभाव जारी रहता है, तो हमें अपनी श्रद्धा के अर्थ पर फिर से विचार करना होगा। कन्या के पैरों में शुभ रंग लगाने से पहले उसके जीवन में सम्मान के रंग भरना जरूरी है। उसके माथे पर तिलक लगाने से पहले उसके भविष्य पर लगे भेदभाव के धब्बे मिटाना जरूरी है। उसे उपहार देने के साथ शिक्षा, सुरक्षा और आगे बढ़ने के समान अवसर देना भी उतना ही आवश्यक है।

अवसरों की पहचान और सही चुनाव की कला

डॉ. विजय गर्ग

जीवन हमें अनगिनत अवसर प्रदान करता है, लेकिन सफलता केवल अवसरों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती। यह इस बात पर निर्भर करती है कि हम उन अवसरों को कितनी अच्छी तरह पहचानते हैं, उनकी संभावनाओं का आकलन करते हैं और सही समय पर उचित निर्णय लेते हैं। अवसर अक्सर अप्रत्याशित रूपों में सामने आते हैं। कुछ आकर्षक संभावनाओं के रूप में आते हैं, तो कुछ चुनौतियों, असफलताओं और कठिन परिस्थितियों के बीच छिपे होते हैं। सार्थक अवसर और क्षणिक आकर्षण के बीच अंतर करना जीवन का एक महत्वपूर्ण कौशल है।

हर अवसर का लाभ उठाना आवश्यक नहीं होता। कुछ अवसर तत्काल लाभ का वादा करते हैं, लेकिन उनका दीर्घकालीन महत्व बहुत कम होता है। इसके विपरीत, कुछ अवसर धैर्य, परिश्रम और साहस की मांग करते हैं, लेकिन भविष्य में बेहतर परिणाम देते हैं। सफलता की पहली सीढ़ी अपनी क्षमताओं, रुचियों, मूल्यों और दीर्घकालीन लक्ष्यों को समझना है।

सही अवसर वही है, जो हमारी योग्यताओं के अनुरूप हो, हमारे व्यक्तित्व का विकास करे और हमें अपने उद्देश्यों के करीब ले जाए। विशेष रूप से

युवाओं को लोकप्रियता, सामाजिक दबाव और तात्कालिक आर्थिक लाभ से प्रभावित होकर निर्णय लेने के बजाय दूरगामी परिणामों पर ध्यान देना चाहिए। सही निर्णय हमेशा सबसे आसान नहीं होता; कई बार वही निर्णय बेहतर भविष्य की नींव रखता है, जिसके लिए अतिरिक्त मेहनत करनी पड़ती है। किसी अवसर का पूरा लाभ उठाने में समय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि हम बहुत अधिक देर तक निर्णय लेने में हिचकिचाते रहें, तो एक अच्छा अवसर हाथ से निकल सकता है। दूसरी ओर, जल्दबाजी में लिया गया निर्णय अनावश्यक कठिनाइयाँ पैदा कर सकता है। इसलिए विचारपूर्ण विश्लेषण और समय पर कार्रवाई के बीच संतुलन आवश्यक है। कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले हमें संबंधित जानकारी जुटानी चाहिए, संभावित परिणामों पर विचार करना चाहिए, जोखिमों का आकलन करना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर अनुभवी लोगों से सलाह लेनी चाहिए। हालाँकि, किसी निर्णय पर अत्यधिक विचार करते रहना भी बाधा बन सकता है। जब पर्याप्त जानकारी उपलब्ध हो जाए, तो आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

जीवन के कुछ सबसे बड़े अवसर कठिन परिस्थितियों से जन्म लेते हैं। युवाओं को लोकप्रियता, सामाजिक दबाव और तात्कालिक आर्थिक लाभ से प्रभावित होकर निर्णय लेने के बजाय दूरगामी परिणामों पर ध्यान देना चाहिए। सही निर्णय हमेशा सबसे आसान नहीं होता; कई बार वही निर्णय बेहतर भविष्य की नींव रखता है, जिसके लिए अतिरिक्त मेहनत करनी पड़ती है। किसी अवसर का पूरा लाभ उठाने में समय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि हम बहुत अधिक देर तक निर्णय लेने में हिचकिचाते रहें, तो एक अच्छा अवसर हाथ से निकल सकता है। दूसरी ओर, जल्दबाजी में लिया गया निर्णय अनावश्यक कठिनाइयाँ पैदा कर सकता है। इसलिए विचारपूर्ण विश्लेषण और समय पर कार्रवाई के बीच संतुलन आवश्यक है। कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले हमें संबंधित जानकारी जुटानी चाहिए, संभावित परिणामों पर विचार करना चाहिए, जोखिमों का आकलन करना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर अनुभवी लोगों से सलाह लेनी चाहिए। हालाँकि, किसी निर्णय पर अत्यधिक विचार करते रहना भी बाधा बन सकता है। जब पर्याप्त जानकारी उपलब्ध हो जाए, तो आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

जीवन के कुछ सबसे बड़े अवसर कठिन परिस्थितियों से जन्म लेते हैं।

असफलता ऐसे सबक सिखा सकती है, जो कभी-कभी सफलता भी नहीं सिखा पाती। अस्वीकृति हमें अपनी क्षमताओं में सुधार करने के लिए प्रेरित कर सकती है, जबकि अप्रत्याशित परिवर्तन नई संभावनाओं के द्वार खोल सकते हैं।

सकारात्मक दृष्टिकोण हमें कठिनाइयों को केवल बाधा के रूप में देखने के बजाय उनसे सीखने और स्वयं को बेहतर बनाने का अवसर प्रदान करता है। अनेक सफल व्यक्तियों ने धैर्य, रचनात्मकता और दृढ़ संकल्प के बल पर असफलताओं को सफलता की सीढ़ियों में बदला है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक कठिनाई अपने आप सफलता में बदल जाती है। वास्तविक महत्व इस बात का है कि हम परिस्थितियों से सीखें, अपनी रणनीतियों में आवश्यक बदलाव करें और आगे बढ़ने के रचनात्मक रास्ते खोजें। डिजिटल युग में लोग लगातार दूसरों की उपलब्धियों, जीवनशैली और अवसरों से परिचित होते रहते हैं। सोशल मीडिया कई बार यह भ्रम पैदा करता है कि दूसरे लोग हमसे अधिक तेजी से आगे बढ़ रहे हैं और अधिक सफल जीवन जी रहे हैं। इससे जल्दबाजी में निर्णय लेने और अनावश्यक प्रतिस्पर्धा करने की प्रवृत्ति बढ़ सकती है।

हमें समझना चाहिए कि जो अवसर

एक व्यक्ति के लिए उपयुक्त है, वह दूसरे के लिए भी उपयुक्त हो, यह आवश्यक नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थितियाँ, जिम्मेदारियाँ, क्षमताएँ और आकांक्षाएँ अलग-अलग होती हैं। अपनी यात्रा की तुलना दूसरों की उपलब्धियों से करने पर हम अपने वास्तविक लक्ष्यों से भटक सकते हैं।

समझदारी इसी में है कि हम बाहरी अपेक्षाओं के बजाय अपने उद्देश्यों के आधार पर अवसरों का मूल्यांकन करें। किसी अनुपयुक्त अवसर को अस्वीकार करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना किसी अच्छे अवसर को स्वीकार करना। किसी अवसर को पहचान लेना केवल आधा काम है; उसका लाभ उठाने के लिए तैयार रहना भी उतना ही आवश्यक है। ज्ञान, व्यावहारिक कौशल, अनुशासन, आत्मविश्वास और निरंतर सीखने की प्रवृत्ति हमें संभावनाओं को उपलब्धियों में बदलने में सहायता करती है। जो विद्यार्थी संचार कौशल, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रचनात्मकता और समस्या-समाधान की क्षमता विकसित करते हैं, वे उभरते अवसरों का बेहतर लाभ उठा सकते हैं। इसी प्रकार, बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने और नई चीजें सीखने के लिए तैयार रहने वाले पेशेवर भी अधिक प्रभावी ढंग से आगे बढ़ सकते हैं।

कहानी बदलाव की: मुद्रा योजना से मजबूत हुए अमन मित्तल के कदम; दोना-पतल निर्माण से दे रहे दर्जनों युवाओं को रोजगार

शिवपुरी, जीएनएस।

दृढ़ इच्छाशक्ति, निरंतर मेहनत और सरकारी योजनाओं का सही संबल मिल जाए तो छोटे स्तर पर शुरू किया गया व्यवसाय भी सफलता के ऊंचे शिखर छू सकता है। शिवपुरी के फिजिकल थाना क्षेत्र निवासी श्री अमन मित्तल की कहानी ऐसे ही कर्मठ और स्वावलंबी युवाओं के लिए एक प्रेरणा है, जिन्होंने सीमित संसाधनों से शुरुआत कर आज न केवल अपने व्यवसाय को विस्तार दिया है, बल्कि अन्य लोगों के

लिए भी रोजगार के द्वार खोले हैं। श्री अमन मित्तल आज से लगभग 10 वर्ष पहले अपने व्यवसाय की शुरुआत की थी। शुरुआत में उन्होंने मात्र एक मशीन के जरिए दोना-पतल निर्माण का कार्य शुरू किया था। शुरुआती दौर में उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन उनकी निरंतर मेहनत और गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के कारण उनका कार्य धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना से



मिला वित्तीय संबल

अपने व्यवसाय को और अधिक व्यापक रूप से विस्तारित करने के लिए अमन मित्तल को केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री मुद्रा

योजना के तहत 3 लाख रुपये का ऋण स्वीकृत हुआ, जिसे बाद में उद्यमी योजना के अंतर्गत समायोजित किया गया। इस वित्तीय मदद से उन्हें अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने में बड़ी सहायता मिली। आज वे अपने इस संयंत्र में 11 आधुनिक मशीनों के माध्यम से बड़े पैमाने पर कार्य कर रहे हैं।

12 से 15 स्थानीय लोगों को मिल रहा है रोजगार

एक मशीन से शुरू हुआ सफर आज एक लघु उद्योग का

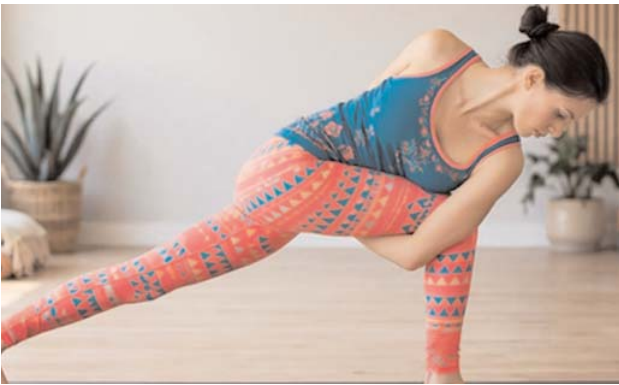
रूप ले चुका है। श्री अमन मित्तल के इस उद्यम में वर्तमान में लगभग 12 से 15 स्थानीय लोग कार्यरत हैं, जिनमें युवा और महिलाएं दोनों शामिल हैं। ये सभी कर्मचारी मशीनों के संचालन के साथ-साथ पैकेजिंग जैसे कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, जिससे उनके परिवारों को भी आर्थिक संबल मिल रहा है।

प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री का जताया आभार

अपनी इस व्यावसायिक यात्रा और सफलता का श्रेय केंद्र

तथा राज्य सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों को देते हुए अमन मित्तल कहते हैं कि शासकीय योजनाओं के सहयोग से ही आज उनका व्यवसाय इस मुकाम पर पहुंच सका है। उन्होंने महिलाओं और युवाओं के सर्वांगीण विकास एवं स्वावलंबन के लिए चलाई जा रही इन योजनाओं के लिए देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव तथा जिला प्रशासन का सहृदय आभार व्यक्त किया है।

परिवृत्त बद्ध पार्श्वकोणासन क्या है? जानिए फायदे और सावधानियां



नई दिल्ली । भारतीय योग परंपरा में शारीरिक लचीलापन, मानसिक एकाग्रता को एक साथ साधने वाले आसनों में %परिवृत्त बद्ध पार्श्वकोणासन% का विशेष स्थान है। यह आसन मुख्य रूप से रीढ़ की हड्डी के ट्विस्ट और हाथों की बंध स्थिति का एक अनूठा संगम है। यह आसन पार्श्वकोणासन का ही एक अधिक चुनौतीपूर्ण और लाभकारी रूप है। संस्कृत में %परिवृत्त% का अर्थ है घूमा हुआ, %बद्ध% का अर्थ है बंधा हुआ और %पार्श्वकोण% का अर्थ है बगल का कोण। इस आसन में शरीर को एक तरफ घुमाते हुए गहरा बंध लगाया जाता है, जो शरीर को एक नया आकार और ऊर्जा देता है। यह न सिर्फ शरीर के निचले हिस्से (पैरों और जांघों) को मजबूती प्रदान करता है, बल्कि पाचन तंत्र की गहरी मालिश कर शरीर को अंदर से डिटॉक्सिफाई (विषमुक्त) करने में भी सहायक होता है। आयुष मंत्रालय के अनुसार, यह आसन शरीर में संतुलन, मानसिक दृढ़ता और आंतरिक अंगों की शुद्धि के लिए बेहद प्रभावी माना गया है। यह

सिर्फ एक स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज नहीं है बल्कि यह पाचन तंत्र को सक्रिय करने, रीढ़ की हड्डी में लचीलापन लाने और शरीर के भीतर जमा टॉक्सिन्स को बाहर निकालने का एक शक्तिशाली अभ्यास है। यह आसन पार्श्वकोणासन का ही एक अधिक चुनौतीपूर्ण और लाभकारी रूप है। यह आसन पाचन तंत्र को भी मजबूत बनाता है। इसे करने के दौरान पेट के अंगों पर गहरा दबाव पड़ता है, जिससे मेटाबॉलिज्म तेज होता है, कब्ज व ब्लोटिंग दूर होती है और शरीर से टॉक्सिन्स आसानी से बाहर निकलते हैं। यह रीढ़ की हड्डी के रोटेशन को बढ़ाता है, जिससे पीठ और कमर की जकड़न दूर होती है। यह क्राइसेप्स, हैमस्ट्रिंग, घुटनों और टखनों को मजबूत करता है। हाथों के बंधने और छाती के खुलने से फेफड़ों की कार्यक्षमता बेहतर होती है और गहरी सांस लेने में मदद मिलती है। यह आसन शरीर में मणिपुर चक्र को सक्रिय करता है, जिससे व्यक्ति में आत्मविश्वास, इच्छाशक्ति और मानसिक एकाग्रता का विकास होता है।

हर रोज करें उत्थित पार्श्वकोणासन, पैरों और पेट की मांसपेशियों को मिलेगी मजबूती

नई दिल्ली । योग पद्धति में ऐसे कई आसन हैं, जो शरीर को मजबूत बनाने के साथ-साथ लचीलापन और संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं। %उत्थित पार्श्वकोणासन% भी ऐसा ही एक योगासन है, जो शरीर के निचले हिस्से को मजबूत करने और पार्श्व अंगों में खिंचाव लाने के लिए किया जाता है। %उत्थित पार्श्वकोणासन% को %एक्सटेंडेड साइड एंगल पोज% भी कहा जाता है। इस आसन में एक हाथ जमीन पर और दूसरा हाथ सिर के ऊपर तिरछा उठाकर शरीर को एक सीधी रेखा में खींचा जाता है। इसके अभ्यास से पैरों, जांघों, कूल्हों और पेट की मांसपेशियों को मजबूत रहती है, जिससे पाचन क्रिया बेहतर रहती है और रीढ़ की हड्डी में लचीलापन आता है। आयुष



मंत्रालय ने इसको करने के फायदे पर अहम प्रकाश डाला है। %उत्थित पार्श्वकोणासन% एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ विस्तारित %पार्श्व कोण मुद्रा% है। यह खड़े होकर किया जाने वाला योगासन है, जो पेट के अंगों की मालिश करता है, पाचन में सुधार लाता है और पैरों व रीढ़ को मजबूत करता है। इसके अलावा,

शरीर में लचीलापन भी बढ़ता है और रीढ़ की हड्डी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वहीं, इससे दिमाग को शांति भी मिलती है और मानसिक तनाव से भी दूरी बनी रहती है। नियमित अभ्यास से शरीर का संतुलन, ध्यान और सहनशक्ति भी बढ़ती है।

इसे करना बेहद आसान है। इसके लिए सबसे पहले योगा मैट पर

दोनों पैरों को एक दूसरे से दूर फैला लें। अब दाहिने पैर के पंजे को बाहर की तरफ घुटने से धीरे-धीरे मोड़ें और उसी मुद्रा में नीचे की ओर बैठें। फिर अपने दाएं हाथ को दाएं पैर के पास जमीन पर रखें और बाएं हाथ को ऊपर की ओर सीधा 90 डिग्री के एंगल में रखने की कोशिश करें। कुछ देर इसी मुद्रा में रहने की कोशिश करें, फिर धीरे-धीरे सामान्य हो जाएं। हालांकि, शुरुआती अभ्यासकर्ताओं को इसको करने में थोड़ी दिक्कत हो सकती है लेकिन धीरे-धीरे आदत हो जाएगी और शरीर खुलने लगेगा। शुरुआती अभ्यासकर्ता इस आसन को किसी विशेषज्ञ की निगरानी में ही करें और अगर किसी भी व्यक्ति को गंभीर चोट, माइग्रेन, या हाल ही में कोई सर्जरी हुई है, तो करने से पहले डॉक्टर या योग विशेषज्ञ से सलाह लें।

योग में आसनों का क्रम है जरूरी, पश्चिमोत्तानासन के बाद करें ये दो आसन

नई दिल्ली । योग अभ्यास का मूल सिद्धांत केवल आसनों को करना ही नहीं बल्कि, उनके उचित क्रम और संतुलन को बनाए रखना है। उत्थित पश्चिमोत्तानासन शरीर के पिछले हिस्से में गहरा खिंचाव लाता है और पेट की मांसपेशियों को एक्टिव करता है। इस आसन के बाद शरीर को आराम देने के लिए मकरासन और भुजंगासन करना जरूरी है। मकरासन शरीर को तुरंत शिथिलता और विश्राम देता है, वहीं भुजंगासन रीढ़ को मजबूती और लचीलापन प्रदान

करता है। मकरासन- योगाभ्यास में उत्थित पश्चिमोत्तानासन (एक तीव्र आगे की ओर झुकने और संतुलन बनाने वाला आसन है) के बाद मकरासन (पेट के बल लेटकर आराम करने वाला आसन) करना रीढ़ की हड्डी के संतुलन, मांसपेशियों की रिकवरी और तंत्रिका तंत्र को शांत करने के लिए बहुत जरूरी माना जाता है। मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान के अनुसार, उत्थित या निरालम्ब पश्चिमोत्तानासन के बाद मकरासन का अभ्यास मुख्य रूप से एक काउंटर-पोज और शिथिलीकरण

के रूप में किया जाता है, जब आप शरीर को एक दिशा में गहराई से मोड़ते हैं, तो उसके विपरीत दिशा में किया जाने वाला आसन शरीर को वापस सामान्य स्थिति में लाता है। उत्थित पश्चिमोत्तानासन में रीढ़ की हड्डी और पीठ की मांसपेशियों पर आगे की तरफ एक गहरा और तीव्र खिंचाव आता है। इसके ठीक बाद मकरासन करने से आराम मिलता है, जिससे रीढ़ की हड्डी की प्राकृतिक संरचना संतुलित बनी रहती है और उसकी जकड़न दूर होती है। भुजंगासन - उत्थित पश्चिमोत्तानासन एक तीव्र

फॉरवर्ड बेंड (आगे की ओर झुकने वाला आसन) है, जिसमें रीढ़ की हड्डी आगे की ओर पूरी तरह खिंचती है। भुजंगासन एक बैकबेंड (पीछे झुकने वाला आसन) है। जब अभ्यासकर्ता आगे झुकने के बाद पीछे झुकते हैं, तो रीढ़ की हड्डी के जोड़ों और मांसपेशियों पर पड़ा दबाव तुरंत दूर हो जाता है और वह अपनी प्राकृतिक स्थिति में वापस आ जाती है। उत्थित पश्चिमोत्तानासन करने से पेट के अंगों पर दबाव बनता है, जिससे पाचन अंगों तीव्र होती है।

रोज करें गोमुखासन, कंधे-पीठ के दर्द से मिलेगी राहत, फेफड़े होंगे मजबूत

नई दिल्ली। आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में खुद को स्वस्थ और तनावमुक्त रखने के लिए योग करना एक अच्छा विकल्प है। योग के विभिन्न आसनों में गोमुखासन शरीर को लचीला और मांसपेशियों को मजबूत रखने में मदद करता है। गोमुखासन नाम दो शब्दों से मिलकर बना है- %गो% यानी गाय और %मुख% यानी मुंह। इस आसन को करते समय शरीर की आकृति गाय के मुंह के समान दिखती है, इसलिए

इसे गोमुखासन कहा जाता है। इस आसन को नियमित रूप से करने से कंधों, छाती और पीठ के ऊपरी हिस्से में खिंचाव मसूस होता है। इस आसन में शरीर की मुद्रा गायक के मुख जैसी दिखाई देती है, इसलिए इसे गोमुखासन कहा जाता है। आयुष मंत्रालय के अनुसार, गोमुखासन बैठकर किए जाने वाले महत्वपूर्ण आसनों में से एक है, जो आसन छाती और कंधों के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। दरअसल, इस आसन को करने के दौरान



हाथों को पीठ के पीछे ले जाकर आपस में बांधा जाता है और छाती को आगे की ओर खोला जाता है।

इस प्रक्रिया से छाती के हिस्से में खिंचाव आता है और छाती पूरी तरह से खुल जाती है। छाती खुलने

से फेफड़ों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। फेफड़ों को फैलने और सिकुड़ने के लिए ज्यादा जगह मिलती है, जिससे उनकी कार्यक्षमता बढ़ती है और शरीर में ऑक्सीजन का प्रवाह बेहतर होता है। यही कारण है कि यह आसन सांस से जुड़ी समस्याओं में काफी मददगार है।

नियमित रूप से गोमुखासन का अभ्यास करने से अस्थिमा, सांस फूलना और छाती में जकड़न जैसी परेशानियों में आराम मिलता

है। इसके अलावा यह आसन कंधों और गर्दन की अकड़न को दूर करता है, पीठ को मजबूत बनाता है और शरीर के पोस्चर को भी सुधारता है।

यदि शुरुआत में पीठ के पीछे दोनों हाथ आपस में न मिलें, तो जबरदस्ती न करें। इसकी जगह आप किसी योग स्ट्रेप या रूमाल का सहारा ले सकते हैं। किसी भी व्यक्ति के घुटनों, कूल्हों, कंधों, कलाई या गर्दन में गंभीर दर्द या चोट है, तो यह आसन न करें।

दिल्ली में सियासी हलचल: लोकतंत्र में संवाद बनाम सड़क का संघर्ष

लेखक-स्वतंत्र लेखक
हरिहर सिंह चौहान, जबरी
बाग नसिया, इन्दौर

देश की राजधानी दिल्ली में इन दिनों राजनीति की गर्म हवा चल रही है। एक ओर युवा वर्ग जंतर-मंतर पर अपनी आवाज बुलंद कर रहा है, तो दूसरी ओर मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग ने सियासी माहौल को और गर्म कर दिया है। धर्मेंद्र प्रधान के प्रकरण के बाद से यह हलचल और तेज हुई है। यह पूरा घटनाक्रम केंद्र की राजनीति में भूचाल जैसा प्रतीत हो रहा है, जहां विपक्ष सरकार को घेरने की हर संभव कोशिश में जुटा है।

दो पक्ष, दो दावे

सत्ता पक्ष का पक्ष- केंद्रीय

मंत्री शिवराज सिंह चौहान और अनुराग ठाकुर ने मोर्चा संभालते हुए विपक्ष के प्रदर्शन को %अराजकता और हुड़दंग% बताया। उनका आरोप है कि कांग्रेस और राहुल गांधी जेन-जी की आड़ में राजनीतिक रोटियां सेंक रहे हैं और यह तमाशा केवल अपनी राजनीति चमकाने के लिए है, आम जनता से इसका कोई सरोकार नहीं है। विपक्ष का पक्ष- विपक्ष का कहना है कि अभिव्यक्ति की आजादी और वैचारिक संवाद पर प्रश्नचिह्न क्यों लगाया जा रहा है? यदि उनके आंदोलन में कोई दम नहीं है तो सड़कों पर इतना सुरक्षा बल, पुलिस और पाबंदियां क्यों लगानी पड़ रही हैं? विरोध प्रदर्शन



लोकतंत्र में सभी का अधिकार है। चुनावों में पारदर्शिता और निष्पक्षता की मांग तो वे पिछले कई सालों से उठा रहे हैं।

सवाल यह उठता है कि क्या वाकई विपक्ष की मजबूती के

सामने केंद्र सरकार का अभेद्य दुर्ग कमजोर पड़ रहा है? कौन सच्चा है और कौन झूठा, इसका फैसला तो समय करेगा और अब मामला न्यायालय तक भी पहुंच रहा है। लेकिन इतना तय है कि दिल्ली

की हवा में कुछ तो है, जो सियासत को गर्म बनाए हुए है। सत्ता पक्ष भी अब अपने भीतर झांकने को मजबूर है। लोकतंत्र में सड़क और संवाद दोनों का अपना महत्व है, और फिलहाल दोनों ही अपने-अपने तरीके से सक्रिय हैं। बहुत दिनों बाद दिल्ली के महासमर में राजनीतिक दलों का यह दृश्य बहुत दिनों बाद दिखाई दिया। भारत में अपनी अभिव्यक्ति के लिए सड़क पर आना कोई गलत बात नहीं है, वह सड़क छाप कैसे हो रहे हैं। वैचारिकी विचारों का मतभेद अपनी जगह ठीक है, लेकिन सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों को अपने अपने अधिकार मिले हुए हैं फिर अराजकता वाली राजनीति कैसे और कहां से आ

गई? दिल्ली की सियासी हलचल ऐसा लगता है आपसी समन्वय कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा है प्रश्न अगर खड़े हो रहे हैं तो उसका उत्तर यानी स्पष्टीकरण तो केन्द्र सरकार को देना चाहिए। मूल्यांकन कब होगा किसी को नहीं पता तभी तो सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया जा रहा। न्याय के लिए मजबूत आवाज कोई भी हो विषय विवाद कोई भी हो आंदोलन प्रदर्शन में सच्चे दस्तावेज पर अब जन-मानस को और बहुत कुछ देखने को मिलेगा। चुनाव आयोग पर वोट चोरी करने की बात-बे-बात अब देश की राजनीति में ही नहीं दुनिया में चर्चा का विषय बना रहा है, तो सच्चाई सामने आना अब जरूरी है।

‘रंगिली राधा’: नेशनल अवॉर्ड विनर सिंगर सावनी रविंद्र और अरविंद वेगड़ा की आवाज़ में राधा-कृष्ण के प्रेम और गरबा का खूबसूरत संगम

जयसिंह रघुवंशी

नवरात्रि के रंग, गरबा की धुन और राधा-कृष्ण के प्रेम से सजा ‘रंगिली राधा’ इस फेस्टिव सीजन में दर्शकों को झूमने पर मजबूर करने के लिए तैयार है। नेशनल अवॉर्ड विनर सिंगर सावनी रविंद्र और अरविंद वेगड़ा की आवाज़ में सजा यह खास गरबा ट्रैक भक्ति, संगीत और उत्सव की ऊर्जा को एक साथ लेकर आता है। शानदार म्यूजिक और रंगीन विजुअल्स के ज़रिए राधा-कृष्ण के शाश्वत प्रेम को गरबा और डांडिया की खूबसूरत लय के साथ पेश किया गया है।

‘रंगिली राधा’ का कॉन्सेप्ट

दर्शकों को एक अनोखे म्यूजिकल सफर पर ले जाता है, जहां रिकॉर्डिंग स्टूडियो में गाते कलाकारों की दुनिया वृंदावन की दिव्य दुनिया से जुड़ती है। इस म्यूजिक वीडियो में नेशनल अवॉर्ड विनर सिंगर सावनी रविंद्र और वेदांत मेहवार राधा-कृष्ण के रूप में नजर आते हैं। शानदार गरबा कोरियोग्राफी, डांडिया के घूमते हुए स्टेप्स, रंग-बिरंगे कॉस्ट्यूम और जोशीली बीट्स इस गाने को नवरात्रि के जश्न के लिए खास बनाते हैं।

इस गाने का संगीत और कंपोजिशन प्रणव हार्दस ने तैयार किया है, जबकि इसके बोल दिव्येश मुंगरा ने लिखे हैं। पार्थिव

शाह और हृदयेश पिपलोडे ने गाने की अरेजमेंट और प्रोड्रामिंग की है। शहनाई, इलेक्ट्रिक और बेस गिटार, इसराज और सारंगी जैसे वाद्य यंत्रों का खूबसूरत इस्तेमाल गाने की धुन को एक खास रंग देता है। गाने की मिक्सिंग और मास्ट्रिंग अजिंक्य धापरे ने की है।

वीडियो का कॉन्सेप्ट और निर्देशन अनघा काकड़े ने संभाला है, जबकि पुण्यकर उपाध्याय ने इसकी कोरियोग्राफी की है। अश्विन नांबियार ने सिनेमैटोग्राफी की जिम्मेदारी निभाई है। मोशन वर्स प्रोडक्शन ने आर्ट डायरेक्शन संभाला है, जबकि एवरटेल स्टूडियोज़ ने

प्रोडक्शन में योगदान दिया है। नेशनल अवॉर्ड विनर सिंगर सावनी रविंद्र और डॉ. आशीष धांडे द्वारा निर्मित ‘रंगिली राधा’ ३६०° वीडियो फॉर्मेट में बैनर तले तैयार किया गया है। यह गाना संगीत प्रेमियों के लिए नवरात्रि का एक खास तोहफा है। राधा-कृष्ण के प्रेम, भक्ति और गरबा की मस्ती को एक साथ महसूस करने वाले दर्शकों के लिए यह ट्रैक इस त्योहारी सीजन को और भी खास बनाने का वादा करता है। तो तैयार हो जाइए डांडिया स्टिक्स उठाते, गरबा के स्टेप्स करने और ‘रंगिली राधा’ की धुन पर इस नवरात्रि को यादगार बनाने के लिए!

नवरात्रि: भक्ति, विज्ञान और आत्मजागरण का दिव्य पर्व

भक्ति, शक्ति और आत्मजागरण का दिव्य संगम

दिव्य गुरु श्री आशुतोष महाराज जी

(संस्थापक एवं संचालक, दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान)

नवरात्रों में समूचा भारत जय माता दी- के जयकारों से गुँज उठता है। मंदिरों में जुड़ते सांस्कृतिक मेले, भक्त श्रद्धालुओं की लम्बी कतारें, गली-गली से उठता कीर्तन संगीत, ऐसे लगता है मानों जनमानस की धमनियों में दौड़ती भक्ति-भावना में नई स्फूर्ति आ गयी हो। भारत भूमि पर मनाया जाने वाला हर पर्व अपने भीतर गूढ़ अध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक प्रयोजनों को संजोए हुए है। नवरात्रे भी इसी श्रृंखला की एक कड़ी है। इसके एक-एक पक्ष में अभूतपूर्व वैज्ञानिकता और आध्यात्मिकता निहित है। नवरात्रे वर्ष में दो बार आते हैं। दोनों बार ऋतु-परिवर्तन के समय! सर्दियाँ आरंभ होने से पहले के ये नवरात्रे शारदीय नवरात्रे कहलाते हैं। ऋतुओं की इस संधिवेला में प्रकृति अनेकानेक परिवर्तनों के दौर से गुजरती है। आरोग्यशास्त्र के अनुसार इस समय महामारी, ज्वर, शीतल, कफ खाँसी आदि रोगों के होने की संभावनाएँ प्रबल हो जाती हैं। यही कारण है कि

वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले हमारे ऋषिओं ने इन दिनों में फलाहार अथवा कम और सुपाच्य आहार लेने पर बल दिया। इसलिये ही नवरात्रों के दौरान व्रत-उपवास आदि करने का विधान है।

नवरात्रों के दिनों में देवी के तीन रूपों की उपासना करने की भी परम्परा है। ये तीन रूप हैं ङ्कू माँ दुर्गा, माँ लक्ष्मी और माँ शारदा। देवी दुर्गा शक्ति का प्रतीक हैं। लक्ष्मी धन-ऐश्वर्य-वैभव की द्योतक हैं तो माँ शारदा सर्वोत्तम विद्या अर्थात् ब्रह्मज्ञान का प्रतिनिधित्व करती हैं। अतः इन तीनों देवियों का पूजन-विद्यान शक्ति-वैभव-ज्ञान के समन्वय की महत्ता पर प्रकाश डालता है। यह संकेतक है कि जीवन को शांत एवं पूर्णतः सफल बनाने के लिये इन तीनों की समरसता जरूरी है। नवरात्रों से जुड़ी महिषासुर की पौराणिक कथा भी संदेशात्मक है। कथा उस समय की है जब धरती महिष आदि असुरों के अत्याचारों से आक्रांत थी। ऐसे में, सभी देवगण एकत्र हुए और उस परम शक्ति महामायी दुर्गा का आह्वान किया।

कच्ची पाटोर के स्थान पर मिला पक्का मकान

श्योपुर, जीएनएस।

पीएम जनमन योजना के माध्यम से हजारों लोगों को पक्के मकान की सुविधा उपलब्ध हुई है। इस योजना से जनजाति समुदाय के लोगों के पक्के मकान में रहने का सपना साकार हो रहा है। विजयपुर विकासखण्ड के

ग्राम सुमरेरा निवासी श्रीमती सादो आदिवासी का परिवार पीएम जनमन आवास योजना में आवास मिलने से पूर्व तक कच्ची पाटोर में निवासरत था, जिससे परिवार को बहुत परेशानी का सामना करना पड़ता था।

श्रीमती सादो आदिवासी को

पीएम जनमन आवास योजना का लाभ मिला और उन्होंने अपने परिवार के लिए पाटोर के स्थान पर एक पक्का स्वच्छ आवास का निर्माण कराया। जिसमें वे पिछले दो साल से निवासरत है। इसके लिये वे माननीय प्रधानमंत्री जी एवं मुख्यमंत्री जी को दिल से

धन्यवाद देती हैं। आवास बनने के बाद उनके सामाजिक स्तर में बदलाव आया है और लोग सम्मान के साथ व्यवहार करते हैं। बच्चों को पढ़ने लिखने में भी सुविधा हो गई है। आवास बनने से उनकी बहुत बड़ी समस्या हल हो गई है।

सफलता की कहानी: प्रधानमंत्री कुसुम-ए अंतर्गत भिण्ड के युवा चेतन सिंह नरवरिया ने स्थापित किया 1 मेगावाट का सौर ऊर्जा संयंत्र

भिण्ड, जीएनएस।

भिण्ड जिले के युवा श्री चेतन सिंह नरवरिया ने परंपरागत खेती से आगे बढ़कर नवाचार की मिसाल पेश की है। उन्होंने ग्राम मुसतरा में प्रधानमंत्री कुसुम योजना घटक-ए के तहत 1 मेगावाट क्षमता का सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया है, जो क्षेत्र की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करेगा। इस परियोजना से ऊर्जा सुरक्षा, आय में वृद्धि और प्रदूषण में कमी जैसे लाभ प्राप्त हो रहे हैं।

चेतन बताते हैं कि इस परियोजना की कुल लागत 4.70 करोड़ रुपए है, जिसके लिए उन्होंने

3.25 करोड़ रुपए का ऋण लिया। 28 जुलाई 2026 से इस संयंत्र में बिजली उत्पादन शुरू हो गया है और यहाँ बनने वाली बिजली की आपूर्ति मुसतरा सब-स्टेशन को की जा रही है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के साथ 25 वर्षों के लिए 3.25 रुपए प्रति यूनिट की दर से विद्युत खरीद अनुबंध (पीपीए) हुआ है, जिससे उन्हें लंबी अवधि तक निश्चित आय का जरिया मिल गया है। इस सौर संयंत्र से प्रतिवर्ष 18 से 20 लाख यूनिट बिजली का उत्पादन होगा। संयंत्र का रखरखाव भी बहुत



आसान है और माह में केवल 3 से 4 बार पैन्लों की धुलाई करनी होती है।

भविष्य में चेतन सौर पैन्ल के नीचे सब्जियों के उत्पादन का विचार कर रहे हैं। उनका यह संयंत्र

सेमी एग्रो-वोल्टाइक मॉडल पर आधारित है, जिससे ऊर्जा उत्पादन और खेती का दुगुना लाभ मिल सकता है। इस तकनीक में खेत में जमीन से कुछ ऊँचाई पर सोलर पैन्ल लगाए जाते हैं और उनके नीचे कम ऊँचाई और छाया सहन करने वाली फसलें एवं सब्जियाँ उगाई जा सकती हैं।

चेतन सिंह की यह पहल अन्य युवाओं के लिए प्रेरणा बन गई है। वे कहते हैं कि पीएम कुसुम योजना घटक-ए ने उन्हें ऊर्जा उत्पादक बनने का अवसर दिया है। वे इस लाभकारी योजना के लिए

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को हृदय से धन्यवाद देते हैं।

उल्लेखनीय है कि पीएम कुसुम योजना घटक-ए में कृषक, सहकारी समिति, पंचायत अथवा कृषक उत्पादक संगठनों द्वारा बंजर, परती, दलदली या कृषि योग्य भूमि पर 2 मेगावाट तक की क्षमता वाले सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए जा सकते हैं। रिजर्व बैंक के निर्देशानुसार बैंकों द्वारा पीएम कुसुम घटक-ए के लिए कृषकों को आसान शर्तों पर ऋण उपलब्ध कराया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय गरीबी
उन्मूलन दिवस विशेष
17 अक्टूबर 2026

गरीबी बहुत बुरी बीमारी है, यह अपने साथ सैकड़ों समस्याओं को लेकर आती है और जीवनमान और विकास को चरमरा देती है। लगातार बढ़ती आर्थिक विषमता गरीबी मुक्त देश बनाने में रोड़े खड़े करती है, ऊपर से महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी गरीबी कम होने नहीं देती। हर क्षेत्र में राजनीतिक हस्तक्षेप और भाई-भतीजावाद दबाव बने रहता है। मिलावटखोरी, प्रदूषण, कांक्र्रीट के बढ़ते जंगल और कटते वन ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाते हैं, इससे प्राकृतिक आपदाएं आती हैं, बीमारियां बढ़ती हैं, सेहत पर बुरा असर पड़ता है, जिसकी सबसे बड़ी मार गरीब तबके को झेलनी पड़ती है। गरीब तबके को विविध सरकारी योजनाओं के बावजूद योग्य जीवनमान स्तर तक पहुंचने में बेहद मुश्किलें आती हैं।

विश्व असमानता रिपोर्ट 2026 अनुसार, देश में शीर्ष 10 फीसदी आबादी के पास राष्ट्रीय आय का 58 प्रतिशत और 65 प्रतिशत राष्ट्रीय संपत्ति है, जबकि निचले तबके के 50 फीसदी जनसंख्या के पास केवल 15 प्रतिशत राष्ट्रीय आय का हिस्सा है। शीर्ष 1 फीसदी के पास कुल राष्ट्रीय संपत्ति का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा है। विश्व आर्थिक मंच अनुसार, वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक 2026 में भारत 145

गरीबी का दंश: विकास के दावों के बीच संघर्षरत जीवन

देशों में से 131वें स्थान पर है। हर साल 17 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस गरीबी मिटाने के लिए जनजागृति हेतु पुरे विश्व में मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस साल 2026 को सभी के लिए सुरक्षित घर यह थीम है।

गरीबी में दो वक्त की रोजीरोटी के इंतजाम में लोगों का अधिकतम समय निकल जाता है, घर परिवार, बच्चों के लिए पर्याप्त समय भी नहीं निकाल पाते। उनमें सेहत, शिक्षा, भविष्य और लोककल्याणकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता की कमी होती है। अधिकतर राजनीतिक दल भी चुनाव के वक्त गरीबों को याद करते हैं और उनसे किये गए बड़े-बड़े वादे समयानुसार भूल जाते हैं। गरीबी में जन्मा बच्चा अपनेआप को गरीबी की दलदल से निकालने के लिए असंख्य संघर्षों को सहता है, ताकि अपने साथ आनेवाली पीढ़ी को भी बेहतर जीवनस्तर मिल सके, परंतु चंद लोगों के हिस्से ही यह कामयाबी आती है।

गरीबी के कारण पेट भर अनाज नहीं मिलता उसमें भी पोषक आहार नहीं, साफ पीने का पानी नहीं, रहने की सही व पर्याप्त जगह नहीं होती, मौसम के बदलाव

के हिसाब से भी जीवन जीना बेहद कष्टदायक होता है। अधिक समय तक पेटभर खाना और पोषक आहार, शुद्ध जल, शुद्ध ऑक्सीजन शरीर को न मिलने के कारण कृपोषण और गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं की संभावना बनी रहती है। बीमार होने पर बेहतर इलाज, दवाइयों और हेल्थ इंश्योरेंस तक पहुंच न होने से रोग का समय पर इलाज नहीं हो पाता, रोग गंभीर होता जाता है और जीवन प्रत्याशा कम होती जाती है। घर की माली हालत के कारण बहुत बार बच्चों को जल्द स्कूल छोड़ना पड़ता है और परिवार को आर्थिक मदद के लिए काम करना पड़ता है।

हमारे देश में बेरोजगारी की स्थिति से हम अच्छे से वाकिफ हैं, थोड़ेसे चतुर्थ श्रेणी पद के लिए भी लाखों उच्च शिक्षित उम्मीदवारों के आवेदन मिलते हैं, जिसमें अभियंता, प्रबंधन, पीएचडी पदवी धारक तक बड़ी संख्या में होते हैं। आवेदन के लिए इन लाखों बेरोजगार युवा उम्मीदवारों से परीक्षा शुल्क के तौर पर करोड़ों रुपया सरकार के पास जमा होता है। उग्र निकल जाती है, लेकिन योग्यतानुसार रोजगार नहीं मिलता, योग्यतानुरूप रोजगार या नौकरी

मिलना तो बहुत मुश्किल है। मनुष्य की शिक्षा और रोजगार ही उसे गरीबी से उबरने का मौका देती है, अगर कोई कड़ी मेहनत करके उच्च शिक्षा हासिल करता है और नौकरी या रोजगार के योग्यता रखते हुए भी वह रोजगार प्राप्ति से वंचित होता है तो उसके और उसके परिवार के सपने चकनाचूर हो जाते हैं। नौकरी के लिए भ्रष्टाचार, पेपर लीक और राजनीतिक दबाव की खबरें भी अक्सर सुर्खियों में होती हैं, फिर ऐसे परिस्थिति में गरीबी की जंजीरों को कैसे तोड़कर व्यक्ति बाहर निकलेगा?

बढ़ती बेरोजगारी के कारण उच्च शिक्षित युवा भी जो काम मिले, वह करने को तैयार हो जाते हैं, कम शिक्षा वाले युवा के साथ कम आय वाला शारीरिक श्रम भी करते हैं। कौशल की कमी और संसाधनों के कारण भी बेरोजगारी बढ़ती है। गरीबी में असुरक्षित आवास, भीड़-भाड़ वाली तंग गली, गंदी नालियां, झोपड़पट्टी, कचरा, अस्वच्छता और मच्छर-मकियों का प्रकोप, अनधिकृत बस्तियों में रहने या बेघर होने से पर्यावरण से जुड़े खतरों को भी सहना पड़ता है। ऐसे निकट दूषित वातावरण में बीमारी, नशाखोरी

और अपराध गतिविधियों का बोलबाला होता है।

ऐसे परिस्थिति में रहने के कारण मनुष्य की सोच-समझ पर गहरा आघात होता है, हमेशा पैसों की तंगी के बारे में विचार करना, अपनी इच्छा, आकांक्षाओं को मारकर अधिकतर कर्ज के बोझ तले घुट कर जीते हैं, सामाजिक बदनामी, पारिवारिक कलह, तनाव, बैचेनी शरीर के साथ मानसिक स्वास्थ्य भी खराब करती है। गरीबों को अधिकतर सामाजिक, जातिवादी भेदभाव का शिकार होना पड़ता है। उनके हिस्से राजनीतिक प्रतिनिधित्व की भूमिका नहीं के बराबर होती है। जागरूकता की कमी और सामाजिक सुरक्षितता की कमी के कारण वे अपराध या शोषण का शिकार होने के खतरे में जीने को मजबूर होते हैं।

जिस देश में उन्नत स्वास्थ्य सुविधा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली और योग्यतानुरूप काम मिलता है, जिसके लिए कोई अलग से शुल्क वसूला नहीं जाता, बिना किसी भेदभाव के सबको समान मौके मिलते हैं, वह देश तरक्की की राह पर होता है। अगर यह स्थिति हमारे भारत देश में हो तो गरीबी को जड़ से खत्म किया जा सकता है,

क्योंकि गरीबी से निपटने के लिए सबसे ज्यादा खर्चा स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार पर ही होता है। अगर यह तीनों सेवाएं उन्नत स्तर पर प्रत्येक को मुफ्त में मिलने लगे तो, हर व्यक्ति सक्षम, काबिल, जिम्मेदार और जीवनमान को बेहतर बनाने में कुशल होगा। फिर जनता को मुफ्त अनाज, बिजली, पानी देने की जरूरत नहीं होगी, क्योंकि गरीबी के दलदल से उबरकर व्यक्ति इस काबिल होगा कि, सब खर्चे वह खुद वहन कर सकेगा।

शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की उपलब्धता में अनेक पीढ़ियों की जिंदगियां खत्म हो जाती हैं, फिर भी उन तक यह सहज पहुंच नहीं बना पाती। देश में गरीबों को सामाजिक समरसता में प्रस्थापित करने हेतु उन्हें काबिल बनाना बहुत जरूरी है, ताकि वे खुद अपना विकास कर सकें। सरकार ने भ्रष्टाचार पर नकेल कसकर स्वास्थ्य सुविधा, शिक्षा और रोजगार पर सर्वाधिक बजट रखना चाहिए। हर हाथ को कुशलता और योग्यतानुरूप काम मिलना चाहिए। बीमारी के इलाज में पैसों की कमी के कारण किसी भी गरीब की जान नहीं जानी चाहिए। सबको पोषक आहार, स्वच्छ जल और शुद्ध ऑक्सीजन मिलना चाहिए। देश में सक्षम नागरिक बनाने पर जोर देना चाहिए।

लेखक, डॉ. प्रीतम भी. गेडाम (महाराष्ट्र सरकार द्वारा सम्मानित लेखक)

सेमीकंडक्टर क्रांति : तकनीकी महाशक्ति बनने की भारत की राह

डॉ. विजय गर्ग

सेमीकंडक्टर आधुनिक दुनिया को संचालित करने वाली अदृश्य शक्ति है। स्मार्टफोन, कंप्यूटर, इलेक्ट्रिक वाहन, चिकित्सा उपकरण, उपग्रह और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी तकनीकें चिपों पर निर्भर हैं। आकार में नाखून से भी छोटी ये चिपें वैश्विक अर्थव्यवस्था, राष्ट्रीय सुरक्षा और तकनीकी विकास को प्रभावित करती हैं। भारत के लिए सेमीकंडक्टर उद्योग का विकास केवल औद्योगिक विस्तार का विषय नहीं, बल्कि तकनीकी महाशक्ति बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण रणनीतिक आवश्यकता है।

आधुनिक तकनीक की रीढ़ हैं चिपें : सेमीकंडक्टर ऐसे पदार्थ हैं, जिनकी विद्युत चालकता

को नियंत्रित किया जा सकता है। सिलिकॉन इनका सबसे अधिक उपयोग होने वाला पदार्थ है। एक छोटी-सी चिप पर अरबों सूक्ष्म इलेक्ट्रॉनिक घटक तैयार किए जा सकते हैं। इनकी सहायता से प्रोसेसर, मेमोरी और विशेष सर्किट बनाए जाते हैं, जो मशीनों को जटिल कार्य करने में सक्षम बनाते हैं।

स्मार्टफोन में सूचनाओं के प्रसंस्करण, वाहनों में इंजन और सुरक्षा प्रणालियों के संचालन तथा अस्पतालों में जांच उपकरणों के लिए सेमीकंडक्टर आवश्यक हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, दूरसंचार, रक्षा प्रणालियों और अंतरिक्ष अनुसंधान में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। इसीलिए चिपों की आपूर्ति में बाधा आने से अनेक उद्योग प्रभावित हो सकते हैं।

कोरोना महामारी के दौरान वैश्विक स्तर पर चिपों की कमी ने इस निर्भरता के जोखिम को उजागर किया। वाहन निर्माण से लेकर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के उत्पादन तक कई क्षेत्रों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इससे स्पष्ट हुआ कि यदि चिप उत्पादन कुछ देशों तक सीमित रहेगा, तो वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान का असर पूरी दुनिया पर पड़ सकता है।

भारत को सेमीकंडक्टर उद्योग की जरूरत : भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, डिजिटल सेवाओं और आधुनिक तकनीकों का बड़ा बाजार बन चुका है। विशाल घरेलू बाजार, इंजीनियरिंग प्रतिभा, डिजिटल बुनियादी ढांचा और उद्यमशीलता का वातावरण देश में सेमीकंडक्टर उद्योग के विकास

की संभावनाएं बढ़ाते हैं। इसके बावजूद भारत लंबे समय से चिपों के आयात पर निर्भर रहा है। यह निर्भरता अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति में व्यवधान, भू-राजनीतिक तनाव, कीमतों में उतार-चढ़ाव और तकनीकी प्रतिबंधों के समय चुनौती बन सकती है। देश में चिप निर्माण की क्षमता बढ़ने से आयात पर निर्भरता कम करने, उच्च कौशल वाले रोजगार पैदा करने और घरेलू नवाचार को प्रोत्साहित करने में मदद मिलेगी।

सेमीकंडक्टर उद्योग का लाभ केवल इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेगा। इलेक्ट्रिक वाहन, नवीकरणीय ऊर्जा, दूरसंचार, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे क्षेत्रों को भी इससे मजबूती मिलेगी। इसलिए

चिप निर्माण को आर्थिक विकास और रणनीतिक आत्मनिर्भरता से जोड़कर देखना आवश्यक है।

सरकारी पहल और निवेश की संभावनाएं : भारत ने सेमीकंडक्टर उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए नीतिगत सहायता और वित्तीय प्रोत्साहनों का सहारा लिया है। इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन का उद्देश्य चिप निर्माण, डिस्ट्रे निर्माण और संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा देना है। घरेलू और विदेशी कंपनियों के साथ साझेदारी के माध्यम से इस क्षेत्र में निवेश आकर्षित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

इस उद्योग की आपूर्ति श्रृंखला केवल चिप बनाने वाली फैक्टरी तक सीमित नहीं होती। इसमें चिप डिजाइन, निर्माण, असेंबली, परीक्षण और पैकेजिंग

सहित अनेक गतिविधियां शामिल हैं। भारत इन सभी क्षेत्रों में अपनी क्षमता विकसित करके वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में महत्वपूर्ण स्थान हासिल कर सकता है।

चिप डिजाइन के क्षेत्र में भारत के पास पहले से प्रतिभाशाली इंजीनियरों और तकनीकी विशेषज्ञों का आधार है। भारतीय पेशेवर वैश्विक कंपनियों के लिए डिजाइन और अनुसंधान संबंधी कार्य करते हैं। इस क्षमता को घरेलू अनुसंधान, बौद्धिक संपदा के विकास और उन्नत डिजाइन तकनीकों से जोड़ना आवश्यक है। इससे भारत केवल तकनीकी सेवाएं देने वाला देश नहीं, बल्कि अधिक मूल्यवर्धित तकनीकी उत्पाद विकसित करने वाला केंद्र भी बन सकता है।

संसार की निष्फुरता में कोमल हृदय: दार्शनिक सूर्य जी...



चुपचाप चलते रहना ही जीवन है!
हितकारी बनो,
हितैषी बनो मनुष्यों रे!
तुम्हारी आतुरता,
तुम्हारे अति-चिंतन की ही देन है।

यह संसार जितना सुंदर दिखता है, उतना ही कठोर भी है। यहाँ अमानवीयता है, अत्याचार है, और सबसे बड़ा छल यह है कि सज्जनता को ही कमजोरी कह दिया गया है। मैंने जीवन भर इस प्रचलित सोच पर प्रश्न उठाए

हैं। क्योंकि मेरा दृढ़ मत है, जो मन सबके कल्याण की कामना करता है, वही मनुष्य का सबसे शुद्ध रूप है।

हितैषी और सज्जन बने रहना कोई कमजोरी नहीं, बल्कि एक प्रकार का तप है। इस अमानवीय और भीषण संसार में भी सबकी भलाई करना और सबकी भलाई चाहना, यही सबसे बड़ी बात है। और इसी राह पर चलते हुए यह भी समझा कि जीवन में जिज्ञासु बने रहना अच्छा और आवश्यक है, पर

जिज्ञासा संतुलित होनी चाहिए। निरंतर सीखने की ललक रहे, पर अति न हो, क्योंकि अति से मानसिक शांति भंग होती है।

मनुष्य के अंतस् में जब-जब आतुरता होती है, तो वह अधिक चिंतन के कारण ही होती है। अधिक सोचना ही मनुष्य को निर्बल बनाता आया है। इसलिए अपने सही पथ पर बढ़ते रहना, अपने तरीके से जीना और बीच-बीच में रुक कर अपने अंतर्मन को सुनना ही श्रेयस्कर है।

इसे मनुष्यों को समझना

होगा, विशेषकर जो वास्तव में संवेदनशील हृदय के हैं कि बाहरी कोलाहल से बड़ा कोई शत्रु नहीं होता। संसार में कठोरता अधिक है और मानवता की कमी है, इसे बनाए रखने की आवश्यकता है।

जब अत्यधिक चिंतन मन को बोझिल कर दे, तब क्षण भर रुक कर स्वयं को सुनना चाहिए। सब कुछ संभव है। अपनी संवेदनशीलता, नम्रता तथा सज्जनता को निरंतर बनाए रखिए। मेरा ऐसा मानना है कि

मनुष्य का मूल्य उसके ज्ञान से नहीं, उसके कर्म से है। अपने पथ पर निष्काम भाव से चलते रहना ही जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता है, और यह सार्थकता चुपचाप लगे रहने में है, भीड़-भाड़ से बचकर।

(यह लेख पूर्णतः दार्शनिक है। इसके रचयिता सूर्य जी भारतीय संस्कृति के संरक्षक, समरसता के प्रतीक, आध्यात्मिक चिंतक, महनीय दार्शनिक, साहित्यकार, मानवतावादी एवं समाज-सुधारक हैं।)

नरवर की ऐतिहासिक श्री लोड़ी देवी

प्रस्तुति: देवेन्द्र शर्मा लेखक एवं पत्रकार

भारत वर्ष के मध्य प्रदेश में स्थित शिवपुरी जिला मुख्यालय से उत्तरी दिशा में राष्ट्रीय राजमार्ग 46 से 28 कि.मी. दूर एक ऐतिहासिक नगर नरवर स्थित है। नरवर भारत के प्रसिद्ध नरेश नल एवं महारानी दमयंती के नाम से जुड़ा है। क्योंकि सतयुग में राजा नल-दमयंती की राजधानी नरवर थी। इस कारण नरवर की अपनी अलग पहचान है। प्राचीन काल से ही नरवर मंदिरों, स्मारकों का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। नरवर के अतीत का इतिहास यहाँ के प्रसिद्ध नल-दमयंती दुर्ग, पुरातन अभिलेखों, मंदिरों एवं नरवर से जुड़ी किवंदतियों, कहानियों से ज्ञात होता है। नरवर की ऐतिहासिकता का उल्लेख महाभारत के वनपर्व में मिलता है जिसमें राजा नल-दमयंती की कथा का विस्तार पूर्वक वर्णन है।

नरवर में राजा नल से लेकर सन् 1947 के पूर्व तक नरवर के किले पर जितने भी राजा हुए, उन्होंने नगर में एक से बढ़कर भव्य मंदिर एवं सिद्ध देव स्थानों की स्थापना कराकर नरवर को मिनी वृंदावन बना दिया। नरवर में वर्तमान में प्राचीन एवं भव्य 75 मंदिरों से भी अधिक मंदिरों की श्रृंखला है। इसी श्रृंखला की कड़ी में नरवर की ऐतिहासिक श्री लोड़ी देवी का मंदिर है, जो संपूर्ण भारत वर्ष में अपनी तांत्रिक, चमत्कारी कथा के कारण प्रसिद्ध है। श्री लोड़ी देवी मंदिर पर सनातन सम्प्रदाय के लोग मनौतियाँ मांगने दूर-दूर से आते हैं। वर्ष में पौष मास को छोड़कर शेष 11 माह यहाँ विशाल जन समूह एकत्रित होता है। हजारों श्रद्धालु प्रतिदिन श्री लोड़ी माता की पूजा अर्चना करने आते हैं। यहाँ प्रतिदिन मेला सा लगा रहता है।

श्री लोड़ी माता का मंदिर नरवर के दक्षिण द्वार के समीप विन्ध्याचल पर्वत की श्रृंखला की तलहटी पर बना हुआ है। मंदिर के पिछले अहाते के बाहर पश्चिमी दिशा में नरवर किले की विशाल पहाड़ी हरीतिमा को लिए हुए स्तब्ध खड़ी है। हरी भरी पहाड़ी के कारण

मंदिर की नैसर्गिक शोभा में चार चाँद लग गये हैं। मंदिर के अन्दर राजमन्दिर में एक छोटी सी छत्री में श्री लोड़ी देवी की होम द्वारा पूजा-अर्चना की जाती थी। पूर्व में श्री लोड़ी देवी की यहाँ कोई प्रतिमा नहीं थी। प्रेतात्मा के रूप में होम द्वारा ही पूजा जाती थी। लेकिन वर्तमान में मुम्बई की सुनीता बहनजी द्वारा यहाँ पर श्री लोड़ी माता की अत्यंत सुंदर एवं मनमोहक प्रतिमा की प्राणप्रतिष्ठा बड़ी ही धूम शाम से कराई गई जो श्रद्धालुओं के लिए दर्शनीय है। श्री लोड़ी माता के आशीर्वाद से श्रद्धालुओं की मनचाही मुराद पूरी होती है। मनौती मांगते समय मंदिर के पिछले अहाते पर महिलायें हाथ से उल्टे थापे लगाती हैं। मुराद पूरी होने पर दोबारा यहाँ आकर सीधे थापे लगाती हैं। 15वीं सदी में जब ग्वालियर पर राजा मानसिंह तोमर का राज्य था, उस समय लोड़ी एक महान तांत्रिक थी। जो पहाड़गढ़ मुरैना की निवासी थी। उससे बड़ा कोई उस समय तांत्रिक नहीं था। कोई भी देवी-देवता लोड़ी की तांत्रिक क्रिया को नष्ट नहीं कर सकता था। क्योंकि लोड़ी देवी को श्री काली देवी का अकाट्य आशीर्वाद था, ऐसी मान्यता है। जिसका वर्णन साहित्यकार श्री वृंदावन लाल वर्मा जी के द्वारा लिखित मृगनयनी उपन्यास में भी किया गया है।

एक किवंदती के अनुसार 15वीं सदी में लोड़ी अपने दल-बल के साथ नरवर में अपनी तांत्रिक क्रिया की जादूगरी दिखाने के उद्देश्य से नरवर के तत्कालीन राजदरबार में राजा के समक्ष उपस्थित हुई। उस समय राजा अपने किले के कचहरी महल में अपने राज दरबारियों के साथ बैठे हुए राज्य की समृद्धि हेतु मंत्रणा कर रहे थे। इस बीच महाराज के सामने लोड़ी के यकायक उपस्थित होने से राज आश्चर्यचकित रह गये। राज दरबार में राजा ने लोड़ी से उपस्थित होने का अभिप्राय पूछा तो लोड़ी ने अपनी जादूगरी दिखाने का प्रस्ताव रखा। वह यह था कि नरवर किले के दक्षिण-पश्चिमी छोर के सामने हजीरा पर्वत से कच्चे सूत को



तांत्रिक क्रिया द्वारा किले के परकोटे (दक्षिण-पश्चिमी छोर वाले अहाते की प्राचीर तक) तक बाँधकर उस कच्चे सूत पर स्वयं लोड़ी (नटनी) चलकर हजीरे से किले पर उतरेगी। यह आश्चर्यचकित करतब की बात सुनकर राजा सहित सभी राज दरबारी हंस पड़े और लोड़ी का मजाक उड़ाया। लोड़ी अपने उपहास पर राजा से तर्क-वितर्क करते हुये तांत्रिक लहजे में बोली कि महाराज अगर मैं कच्चे सूत पर चलकर आपके किले पर आ गई तो आप मुझे क्या देंगे? इस प्रश्न के उत्तर में राजा ने लोड़ी से कहा कि मैं अपना सम्पूर्ण राज्य तुम्हें दे दूंगा। इस शर्त पर लोड़ी तैयार होकर किले से प्रस्थान कर हजीरा पर्वत पर पहुँच कर तांत्रिक क्रिया द्वारा समस्त हथियार बाँध लिये, जिससे राजा तांत्रिकों के माध्यम से कच्चा सूत न कटवा सकें।

लोड़ी ने शर्त रखते हुये राजा से कहा था कि अगर मैं कच्चा सूत पार न कर सकी तो मेरी बिरादरी को कोई भी नटनी भविष्य में नरवर बाँध लिये, जिससे राजा तांत्रिकों के माध्यम से कच्चा सूत न कटवा सकें।

सूत पर चलते हुये किले की प्राचीर की ओर बढ़ने लगी। लोड़ी को आधी से अधिक दूरी कच्चे सूत पर तय कर अपने मिशन में सफल होती देख राजा व राज्य के सभी मंत्री हैरान होने लगे। राजा ने तांत्रिकों के माध्यम से स्वयं अपनी इष्ट देवी का स्मरण करते हुये धनुष-बाण, भाले, बरछी, तलवार इत्यादि नाना भाँतिके अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग किया, किन्तु कच्चा सूत नहीं कटा। लोड़ी कच्चे सूत पर बढ़ती ही चली आ रही थी किले की तरफ, तब आखिर में एक मंत्री ने सलाह दी कि महाराज आप सभी शस्त्रों का अनुसंधान कर चुके हैं, किन्तु एक मोची की रांपी जो चमड़ा काटने के काम आती है, यह भी एक प्रकार का हथियार है। अगर लोड़ी ने इस रांपी को तंत्र द्वारा नहीं बाँधी होगी तो निश्चित ही कच्चा सूत कट जावेगा और हमारी विजय हो जायेगी। राजा ने अन्तिम बार मंत्री की सलाह मानकर मोची की रांपी को अभिमंत्रों द्वारा बढ़ती हुई लोड़ी के कच्चे सूत पर प्रहार किया। जिससे कच्चा सूत कट गया और लोड़ी (नटनी) किले की प्राचीर से थोड़ी दूरी पर ही गिरकर किले की तलहटी में प्राण त्याग

दिये।

ऐसी किवंदती है कि जब लोड़ी किले की तलहटी में गिरी थी, तब उसके शरीर के 7 अंग नरवर अंचल में 7 स्थानों पर अलग-अलग गिरे और मूल धड़ नरवर के किले की तलहटी में गिरा। इस प्रकार आज शिवपुरी जिले में लोड़ी के सात स्थान हैं, जिसमें मूल स्थान नरवर में ही है। साथ ही एक किवंदती जो नरवर क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध है, उसके अनुसार ऐसा कहा जाता है कि श्री लोड़ी माता (नटनी) के पति तंत्र क्रिया द्वारा गलती से शेर बन गए थे जो उक्त समय नरवर राजा की कैद में थे। लोड़ी माता ने यह कच्चे सूत पर चलने का प्रस्ताव अपने पति की मुक्ति के लिए ही रखा था, किंतु यह बात राजा को ज्ञात नहीं थी। जब लोड़ी माता किले की तलहटी में गिरी तब उस शेर ने उनके धड़ के समीप अपना सर एक पत्थर के ऊपर पटक कर अपने प्राण त्याग दिए थे। शेर के देह में से एक पुरुष की आत्मा उत्पन्न हुई, जब यह बात राजा को ज्ञात हुई तब वह अत्यंत बहुत दुखी हुआ।

एक अन्य जानकारी यह भी है कि नरवर किले के अंतिम कच्छवाह राजवंश के वर्तमान में वंशज श्री विनय सिंह जी के अनुसार यह घटना 17वीं शताब्दी के अंत एवं 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में राजा गज सिंह कच्छवाह जी के समय की है। जिस मंत्री द्वारा कच्चा सूत काटने का सुझाव राजा गज सिंह को दिया था इसकी जानकारी जब नरवर राज्य के तत्कालीन सेनापति खांडेराव को मिली तो उन्होंने अत्यंत क्रोध में आकर भरे दरबार में उस मंत्री का सर अपनी तलवार से धड़ से अलग कर दिया और उन्हें ज्ञात था कि लोड़ी देवी के साथ हुई इस घटना से अब नरवर में कच्छवाह राजवंश के पतन हो जाएगा, जिससे खांडेराव नरवर छोड़ कर हमेशा के लिए चले गए।

किले की तलहटी में जिस स्थान पर लोड़ी गिरी थी, उसी स्थान पर उसकी पूजा की जाने लगी थी। क्योंकि राजा ने कच्चा

सूत तो काट दिया था मगर लोड़ी की तांत्रिक क्रिया भक्ति-शक्ति से महाराज इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने नतमस्तक होकर लोड़ी को श्रद्धांजलि अर्पित कर उसकी उसी स्थान पर पूजा-अर्चना की। जिससे लोड़ी ने राजा को प्रेतात्मा के रूप में आशीर्वाद देकर कहा कि तुम जैसे धर्मज्ञ राजा के राज्य की मैं प्रेतात्मा के रूप में रक्षा करूंगी तथा जो भी नर-नारी मुझे पूजेंगे, मैं उनकी मनोकामना पूर्ण कर उन्हें संकट से बचाऊंगी। ऐसा आशीर्वाद देकर लोड़ी की छाया वहीं पर अन्तर्ध्यान हो गयी। तभी से लोड़ी की सम्पूर्ण राज्य की प्रजा द्वारा पूजा की जाने लगी। विभिन्न उत्सव एवं मांगलिक अवसरों पर भी तब से आज तक लोड़ी की पूजा-अर्चना की जा रही है।

जिस स्थान पर राजा ने लोड़ी की पूजा की वह स्थान किले की तलहटी में काफी ऊँचाई पर था। श्रद्धालुओं को आने-जाने में काफी दिक्कत होती थी। इस वजह से बाद में तलहटी से नीचे रोड के किनारे पर श्री लोड़ी माता ट्रस्ट कमेटी द्वारा लोड़ी का मंदिर बना दिया गया। वर्तमान में लोड़ी माता के नाम से शासकीय ट्रस्ट कमेटी है। ट्रस्ट कमेटी ही लोड़ी माता के दरबार का संचालन कर रही है। यात्रियों की सुविधा हेतु श्री लोड़ी माता परिसर में विशाल धर्मशाला का निर्माण करा दिया गया था एवं वर्तमान में एयर कंडीशनर रूम भी बनवा दिए गए हैं। लोड़ी माता के दर्शनों हेतु देश के प्रांतों से लाखों महिलाएं नरवर आकर श्री लोड़ी देवी की पूजा-अर्चना करती हैं। लोड़ी माता पर शामिश, आमीश दोनों प्रकार का भोग लगाया जाता है। लोड़ी देवी सभी की मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं। यह कथा किवंदती नहीं हकीकत है, यहाँ जो महिलाएं आती हैं उनमें से कुछ को लोड़ी माता आती हैं तथा यहाँ से ठीक होकर जाती हैं।

लोड़ी माता के संबंध में एक कहावत अति प्रसिद्ध है कि, नरवर चढे न बेड़नी, एरच पके न ईट गुदनौरा भोजन नहीं, बूँदी छपे न छीट।

कहानी बदलाव की : पीएमएफएमई से बदली भगवान सिंह की तकदीर, लघु उद्योग से बनाई नई पहचान

ग्राम मैहरामपुरा के युवा भगवान सिंह ने योजना का लाभ उठाकर स्थापित किया खुद का उद्योग शिवपुरी, जीएनएस।

शासन की जनहितकारी योजनाओं की मदद से किस प्रकार आम व्यक्ति अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकता है, इसकी प्रेरणादायक मिसाल शिवपुरी जिले के नरवर तहसील अंतर्गत ग्राम पंचायत मगरौनी के ग्राम मैहरामपुरा निवासी श्री भगवान सिंह कुशवाह पेश कर रहे हैं। सीमित संसाधनों और शुरुआती संघर्षों के बीच उन्होंने प्रधानमंत्री

रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमएफएमई) योजना का संबल पाकर अपने व्यावसायिक सफर की एक नई शुरुआत की है।

श्री भगवान सिंह कुशवाह एक साधारण ग्रामीण पृष्ठभूमि से आते हैं। सीमित साधनों के कारण उनके लिए अपने परिवार की आजीविका चलाना और स्वरोजगार के क्षेत्र में आगे बढ़ना आसान नहीं था। पारंपरिक कृषि कार्यों के सहारे जीवनयापन करने वाले भगवान सिंह अपने जीवन में कुछ नया कर आत्मनिर्भर बनने की इच्छा रखते थे, लेकिन पूंजी के



अभाव में उनका यह सपना अटका हुआ था।

उनकी इस कठिनाई के दौर में केंद्र शासन की महत्वाकांक्षी

दूसरों को रोजगार और समाज के लिए प्रेरणा

खुद आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ श्री भगवान सिंह आज क्षेत्र के अन्य बेरोजगार युवाओं के लिए भी प्रेरणा स्रोत बन गए हैं। उनके इस उद्योग के संचालन से स्थानीय स्तर पर 3 से 4 अन्य लोगों को भी प्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिला है, जिससे उनके जीवन स्तर में भी बदलाव आया है। उनकी यह सफलता साबित करती है कि दृढ़ इच्छाशक्ति और सरकारी योजनाओं के सही तालमेल से ग्रामीण युवा उद्यमी बन सकते हैं।

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना वरदान साबित हुई। योजना के तहत उन्हें कुल 4 लाख 50 हजार रुपये का ऋण स्वीकृत हुआ, जिसमें से

शासन की ओर से उन्हें 1 लाख 54 हजार रुपये की भारी-भरकम सब्सिडी (अनुदान) भी प्राप्त हुई। इस वित्तीय सहायता ने उनके व्यवसाय की राह को

बेहद आसान कर दिया।

प्राप्त ऋण और अनुदान राशि का सदुपयोग करते हुए श्री भगवान सिंह ने राइज मिल (चावल मिल) तथा मसालों की पिसाई के लिए प्ल

क्लाइजर मशीन स्थापित की। आज वे इस उद्योग के माध्यम से न केवल अपने उत्पादों की बेहतर मार्केटिंग कर रहे हैं, बल्कि अपने व्यवसाय को सफलतापूर्वक संचालित करते हुए अच्छी आमदनी भी अर्जित कर रहे हैं। इस स्वरोजगार से उनकी आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार आया है।



एक रुपये ना बाबा ना...!

एक रुपया क्रेडिट हुआ, मोबाइल ने संदेश सुनाया, प्रसन्न मन झूम उठा, किस्मत ने जैसे हाथ बढ़ाया। सोचा, बैंक है मेहरबान, एक रुपये का दिया इनाम, मगर पीछे छिपा था, साइबर ठगों का नया पैगाम! एक रुपया आया खाते में, फ़ालतु चक्रा खाया बालों में, लिंक खुला एवं खेल हुआ, खाली खाता रातों-रात! टग बोले, फ़बस लिंक दबाओ, सारी खबर बताओफ़, कहाँ कमाते-कितने खाते, बैंक का राज समझाओ! बैंक न माँगें गोपनीय, न लिंक से खुलती जिम्मेदारी, ओटीपी कभी न देना, अंजान लिंक क्लिक न करें। 1 रु.का लालच छोड़ो, साइबर ठगों से नाता तोड़ो, धन अर्जन में उम्र लगती, लुटते पल में ध्यान जोड़ो!

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

मुंबई के ताज होटल में डॉ. सतेंद्र कुमार जोशी को मिला 'एक्सीलेंस अवॉर्ड 2026'

पुस्तक 'पिता का संघर्ष' के लिए मिला सम्मान, प्रसिद्ध लेखक चेतन भगत रहे समारोह के मुख्य अतिथि

मुंबई, जीएनएस।

ब्रज क्षेत्र के जाने-माने लेखक, समाजसेवी एवं प्रेरक वक्ता डॉ. सतेंद्र कुमार जोशी को मुंबई के ताज होटल में आयोजित भव्य समारोह में 'एक्सीलेंस अवॉर्ड 2026' से सम्मानित किया गया। टीम अपलोड द्वारा आयोजित इस समारोह में उन्हें उनकी चर्चित पुस्तक 'पिता का संघर्ष' के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। इस उपलब्धि से साहित्य जगत और ब्रज क्षेत्र में हर्ष का माहौल है।

समारोह में प्रसिद्ध लेखक एवं मोटिवेशनल स्पीकर चेतन भगत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। चेतन भगत भारतीय साहित्य और लोकप्रिय सिनेमा की दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। उनकी चर्चित कृतियों में Five Point Someone, Mistakes of My Life शामिल हैं, जिन पर क्रमशः '3 इडियट्स' और 'काई पो छे!' जैसी फिल्में आधारित हैं।



डॉ. सतेंद्र कुमार जोशी की पुस्तक 'पिता का संघर्ष'

पिता के त्याग, समर्पण, जिम्मेदारियों, संघर्ष और संतान के प्रति उनके निःस्वार्थ प्रेम को अभिव्यक्त करती है। पुस्तक में उन भावनाओं और अनुभवों को शब्द दिए गए हैं, जिन्हें

अनेक बार पिता अपने बच्चों के सामने खुलकर व्यक्त नहीं कर पाते। यह कृति पारिवारिक संबंधों की गहराई को समझने और नई पीढ़ी को पिता के योगदान का महत्व बताने का प्रयास करती है।

डॉ. जोशी ब्रज क्षेत्र की प्रतिष्ठित 'श्री कृष्णकीर्ति पत्रिका' के संपादक के रूप में भी जाने जाते हैं। साहित्य, सामाजिक सरोकारों और सांस्कृतिक गतिविधियों के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें पूर्व में भी विभिन्न सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। 'एक्सीलेंस अवॉर्ड 2026' उनकी साहित्यिक यात्रा में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में जुड़ गया है।

इस समारोह में अन्य लेखकों को भी सम्मानित किया गया। विभिन्न क्षेत्रों में साहित्यिक एवं रचनात्मक

योगदान देने वाले प्रतिभागियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष बनाया।

डॉ. सतेंद्र कुमार जोशी की पुस्तक 'पिता का संघर्ष' फ्लिपकार्ट, अमेज़न, गूगल प्ले और सायरन पब्लिकेशन ऐप पर उपलब्ध है। पुस्तक को पिता को उपहार देने के साथ-साथ बच्चों को भी भेंट किया जा सकता है, ताकि वे अपने पिता के त्याग, परिश्रम और भावनाओं को बेहतर ढंग से समझ सकें। डॉ. सतेंद्र कुमार जोशी को 'एक्सीलेंस अवॉर्ड 2026' प्राप्त होने पर साहित्यप्रेमियों, शुभचिंतकों और सामाजिक क्षेत्र से जुड़े लोगों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। यह उपलब्धि न केवल उनके लिए, बल्कि ब्रज क्षेत्र के साहित्यिक और सांस्कृतिक जगत के लिए भी गर्व का विषय है।

25 को मानस भवन में होगा ग्वालियर में होगा

अग्रवैश्य युवक युवती परिचय सम्मेलन ग्वालियर, अखिल भारतीय अग्रवाल परिचय सम्मेलन द्वारा 142 वां युवक युवती परिचय सम्मेलन के लिए अभी तक 275 युवक युवतीयो के पंजीयन किये जा चुके हैं, जिनमें ईशा गुप्ता मीनू बंसल, मिनाक्षी अग्रवाल, भारती गोयल दिल्ली, नेंसी तायल पलवल, संजय अग्रवाल दिल्ली, असुल मित्तल फरीदाबाद, हार्दिक मित्तल मथुरा, दिलीप गोयल आगरा, राहुल गर्ग हापुड, आदि है, उक्त जानकारी देते हुए राजेश ऐरन राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया कि 25 अक्टूबर रविवार को दोपहर 2 बजे परिचय सम्मेलन का शुभारंभ होगा, परिचय सम्मेलन के लिए अतिथि के रूप में मुरैना से

महेश चंद्र अग्रवाल,, भिंड से श्री मुकेश अग्रवाल, गोहद से जेपी अग्रवाल एवं विष्णु अग्रवाल,सवलगढ से दिनेश बंसल एवं मोनू गोयल रहेंगे सम्मेलन में मंच पर परिचय कराने के लिए श्रीमती नीलम शाह रचना लोहिया विनीता तायल पूनम अग्रवाल ललित बंसल ज्योति अग्रवाल साधना गोयल पदमा अग्रवाल प्रीति बिंदल रश्मि अग्रवाल रजनी अग्रवाल शशि गर्ग मंगल युवक युवतीयो का परिचय कराने के लिए रहेंगी परिचय सम्मेलन में पंजीयन पूर्ण रूप से निशुल्क है,देश भर में से कोई भी अग्रबंधु अपने विवाह योग्य बच्चों का बायोडाटा हमें मोबाइल पर भेज सकते हैं।

उम्मीदवारों की ज़बरदस्त मांग के बाद 'इंडिया स्किल्स 2026-27' के लिए पंजीकरण विंडो को 19 अक्टूबर तक फिर से खोला गया

वाराणसी, जीएनएस।

कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय (एमएसडीई) ने संस्थानों और भाग लेने के इच्छुक अभ्यर्थियों के कई अनुरोधों के बाद, 'इंडियास्किल्स प्रतियोगिता 2026-27' के लिए पंजीकरण विंडो को 19 अक्टूबर 2026 तक फिर से खोल दिया है यह निर्णय 'वर्ल्ड स्किल्स कॉम्पिटिशन शंघाई' में टीम इंडिया के उत्कृष्ट प्रदर्शन के परिणामस्वरूप कौशल प्रतियोगिताओं के प्रति बढ़ी हुई रुचि के बीच लिया गया है जहाँ भारतीय दल ने वैश्विक स्तर पर दसवाँ स्थान प्राप्त किया और छह रजत पदक तथा बीस मेडलियन

फॉर एक्सीलेंस (उत्कृष्टता पदक) पदक जीते।

इस गति को तब और मजबूती मिली जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 अक्टूबर 2026 को नई दिल्ली में अपने आवास, सेवन लोक कल्याण मार्ग पर %वर्ल्डस्किल्स शंघाई 2026% में हिस्सा लेने वाली टीम इंडिया के प्रतिभागियों से मुलाकात की 7 उनकी इस बातचीत ने भारत के कुशल युवाओं की उपलब्धियों का जश्न मनाया और राष्ट्रीय विकास में व्यावसायिक उत्कृष्टता के महत्व को रेखांकित किया 7 इस मुलाकात के बाद, मंत्रालय को संस्थानों और इसमें भाग लेने के इच्छुक लोगों से %इंडियास्किल्स

2026 27% के पंजीकरण को फिर से खोलने के लिए कई अनुरोध प्राप्त हुए 7 इसके जवाब में पंजीकरण विंडो को 19 अक्टूबर 2026 तक फिर से खोल दिया गया है जिससे अधिक युवाओं को अपने कौशल का प्रदर्शन करने,राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने और वैश्विक मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करने की दिशा में काम करने का अवसर मिल रहा है 7'इंडियास्किल्स 202627% के लिए पहले ही लगभग 4.0 लाख पंजीकरण प्राप्त हो चुके हैं जो अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने तथा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्रतिस्पर्धा करने के प्रति युवाओं में बढ़ती रुचि को दर्शाता

है जो योग्य उम्मीदवार पहले पंजीकरण नहीं करा सके थे वे अब 19 अक्टूबर 2026 तक %स्किल इंडिया डिजिटल हब% (एसआईडीएच) पर अपना आवेदन करके इस अवसर का लाभ उठा सकते हैं 7 कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय की देखरेख में और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) के कार्यान्वयन भागीदार के रूप में आयोजित %इंडियास्किल्स 202627% विनिर्माण,इंजीनियरिंग,निर्माण,डिजिटल प्रौद्योगिकी,रचनात्मक उद्योग और सेवाओं जैसे क्षेत्रों की 63 उद्योग-संबंधी कौशल श्रेणियों को कवर करता है।

महंगाई की मार से आम आदमी की थाली महंगी, बचत पर संकट

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी

महंगाई जब आंकड़ों से निकलकर रसोई तक पहुंचती है, तो उसका असर केवल घरेलू बजट पर नहीं, बल्कि आम आदमी की जीवनशैली, बचत और भविष्य की आर्थिक सुरक्षा पर भी पड़ता है। दाल, चावल, खाद्य तेल, प्याज, लहसुन, अदरक, नींबू और ईंधन जैसी रोजमर्रा की जरूरतों की कीमतें बढ़ने से परिवारों के सामने खर्च और बचत के बीच संतुलन बनाना कठिन हो जाता है। भारत में सितंबर 2026 के महंगाई आंकड़ों ने इसी चिंता को फिर सामने ला दिया है। खुदरा महंगाई बढ़कर 5.54 प्रतिशत और थोक महंगाई 9.92 प्रतिशत पर पहुंच गई।

रसोई के बजट पर सीधा असर

भारतीय परिवारों के लिए

खाद्य वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी सबसे अधिक महसूस होने वाली समस्या है। कम और मध्यम आय वाले परिवार अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा भोजन, आवास, परिवहन और दूसरी बुनियादी जरूरतों पर खर्च करते हैं। ऐसे में खाद्य तेल, दाल, सब्जियों और अनाज के दाम बढ़ने से दूसरी जरूरतों के लिए उपलब्ध राशि कम हो जाती है।

परिवारों को फल, दूध और पौष्टिक खाद्य पदार्थों की खरीद घटानी पड़ सकती है। कुछ लोग कपड़े, मनोरंजन और अन्य खर्चों में कटौती करते हैं, जबकि कई परिवार अपनी बचत का इस्तेमाल करने को मजबूर हो सकते हैं। इसलिए महंगाई का प्रभाव केवल जेब तक सीमित नहीं रहता, बल्कि जीवन की गुणवत्ता और आर्थिक सुरक्षा को भी प्रभावित करता है।

खुदरा और थोक महंगाई में अंतर समझना जरूरी : सितंबर में खुदरा महंगाई अगस्त के 4.83 प्रतिशत से बढ़कर 5.54 प्रतिशत हो गई। इसी अवधि में थोक महंगाई 9.92 प्रतिशत से बढ़कर 11.39 प्रतिशत पहुंच गई। खुदरा महंगाई उपभोक्ताओं द्वारा खरीदी जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में बदलाव बताती है, जबकि थोक महंगाई थोक स्तर पर वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि का संकेत देती है।

थोक महंगाई 11.39 प्रतिशत होने का अर्थ यह नहीं है कि बाजार की प्रत्येक वस्तु इतनी ही महंगी हो गई है। इसका अर्थ है कि सूचकांक में शामिल वस्तुओं के समग्र मूल्य स्तर में पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में इतनी वृद्धि हुई है। फिर भी, थोक कीमतों में लगातार तेजी बनी रहने पर

उत्पादन, परिवहन और व्यापार की लागत बढ़ सकती है। यदि कंपनियां इस अतिरिक्त लागत का बोझ ग्राहकों पर डालती हैं, तो खुदरा बाजार में भी दबाव बढ़ सकता है।

ईंधन की महंगाई से बढ़ती लागत : सितंबर में थोक मूल्य सूचकांक के ईंधन एवं बिजली समूह की महंगाई 25.85 प्रतिशत रही, जबकि विनिर्मित उत्पादों की महंगाई 9.76 प्रतिशत और प्राथमिक वस्तुओं की महंगाई 8.67 प्रतिशत दर्ज की गई। थोक खाद्य सूचकांक में भी महंगाई अगस्त के 7.05 प्रतिशत से बढ़कर 8.66 प्रतिशत हो गई।

ईंधन महंगा होने से माल ढुलाई और उत्पादन लागत पर दबाव पड़ सकता है। इसका असर कृषि उपज को मंडियों तक पहुंचाने, कारखानों में उत्पादन और वस्तुओं के वितरण पर पड़ता है।

इसलिए महंगाई को नियंत्रित करने के लिए केवल ब्याज दरों में बदलाव पर्याप्त नहीं है। आपूर्ति व्यवस्था, बाजार निगरानी और जरूरी वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है।

आरबीआई और सरकार के सामने चुनौती : बढ़ती महंगाई भारतीय रिजर्व बैंक के लिए भी चुनौती पैदा करती है। ब्याज दरों में बदलाव से कर्ज की लागत और बाजार में मांग प्रभावित हो सकती है, लेकिन इससे खाद्य वस्तुओं की कमी या आपूर्ति संबंधी समस्याओं का सीधा समाधान नहीं होता। सरकार को जमाखोरी और कालाबाजारी के विरुद्ध कार्रवाई, आवश्यक वस्तुओं की नियमित आपूर्ति तथा जरूरतमंद परिवारों को राहत पहुंचाने पर ध्यान देना होगा।

आवश्यक वस्तु अधिनियम,

1955 और प्रतिस्पर्धा अधिनियम, 2002 जैसे कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन बाजार में अनुचित गतिविधियों पर अंकुश लगाने में सहायक हो सकता है। हालांकि, कीमतों में हर वृद्धि को जमाखोरी का परिणाम मानना उचित नहीं होगा। उत्पादन, मौसम, परिवहन और अंतरराष्ट्रीय बाजार की परिस्थितियों की भी जांच जरूरी है।

2027 के चुनावों में महंगाई का मुद्दा : महंगाई का असर आर्थिक दायरे से आगे बढ़कर राजनीतिक बहस का हिस्सा भी बन सकता है। वर्ष 2027 में जिन राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं, वहां रोजगार, आय, विकास और सरकारी योजनाओं के साथ घरेलू खर्च भी चर्चा का विषय बन सकता है। मतदाता अपने दैनिक

20 अक्टूबर, मंगलवार को विजयादशमी यानी दशहरा का पावन पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया जाएगा. दशहरा के दिन शस्त्रों की पूजा करने की परंपरा सदियों पुरानी है. यह पर्व भगवान राम द्वारा रावण और माता दुर्गा द्वारा महिषासुर के वध का प्रतीक माना जाता है. शस्त्र हमारी रक्षा, सुरक्षा और अन्याय के नाश का मुख्य माध्यम हैं. इसी कारण से विजयादशमी के इस खास अवसर पर अस्त्र-शस्त्रों की पूजा की जाती है. इस पावन दिन पर अपने घर में शस्त्रों का पूजन करने से घर में खुशहाली आती है और सुरक्षा का अहसास बना रहता है. आइए जानते हैं कि विजयादशमी के दिन शस्त्र पूजा का क्या महत्व है और इसे किस प्रकार पूरी श्रद्धा और नियम से घर पर करना चाहिए.

विजयादशमी पर सिर्फ 45 मिनट का महामुहूर्त, इस विधि से करें शस्त्र पूजा



घर पर कैसे करें शस्त्र पूजा?

शस्त्र पूजा का शुभ मुहूर्त

विजयादशमी की तिथि- मंगलवार, अक्टूबर 20, 2026
विजय मुहूर्त- दोपहर 01:59 बजे से दोपहर 02:45 बजे तक
अवधि- 00 घंटे 45 मिनट
राजा-महाराजाओं की परंपरा और आधुनिक समय में शस्त्र पूजा प्राचीन काल में राजा-महाराजा अपने अस्त्र-शस्त्रों की पूजा करके युद्ध में विजय और राज्य की रक्षा के लिए देवताओं के प्रति अपना आभार व्यक्त करते थे.

वे युद्ध पर जाने से पहले अपने हथियारों की विधिवत पूजा करते थे, ताकि उन्हें विजय प्राप्त हो सके. वहीं आधुनिक समय में यह पर्व हमें अपनी जिम्मेदारियों, आंतरिक शक्ति और सुरक्षा के प्रति हमेशा सजग रहने की प्रेरणा देता है. आज के समय में भी लोग अपने घरों में रक्षा के प्रतीकों की पूजा करते हैं. विजयादशमी का यह पावन दिन हर व्यक्ति को अपनी सुरक्षा और कर्तव्यों की याद दिलाता है. जब हम इस दिन श्रद्धा से पूजन करते हैं, तो हमें जीवन में हर तरह की

बुराई और अन्याय से लड़ने की एक नई शक्ति मिलती है.

शस्त्र पूजा का पौराणिक इतिहास और महिषासुर वध से जुड़ा रहस्य

शस्त्र पूजा की यह महान परंपरा केवल हथियारों के पूजन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका संबंध सीधे तौर पर धर्म, न्याय और अधर्म के नाश से जुड़ा है. पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, विजयादशमी का यह पावन पर्व भगवान श्रीराम के लंकापति रावण

के संहार और मां दुर्गा द्वारा अत्याचारी महिषासुर के वध का सबसे बड़ा प्रतीक माना जाता है. जब देवताओं की शक्तियां भी महिषासुर के आतंक के आगे कमजोर पड़ने लगी थीं, तब मां दुर्गा ने तमाम अस्त्र-शस्त्रों को धारण करके उसका अंत किया था. प्राचीन काल से ही यह मान्यता चली आ रही है कि अन्याय का नाश करने और अपनी रक्षा करने के लिए शस्त्रों का सम्मान करना बेहद जरूरी है, जो हमें हर परिस्थिति में विजयी बनाता है.

घर पर शस्त्र पूजा करने की सबसे आसान और संपूर्ण धार्मिक विधि

स्नान और साफ वस्त्र- विजयादशमी के पावन दिन सबसे पहले सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें.

चौकी की स्थापना- अपने घर के पूजा स्थल या किसी पवित्र स्थान पर लकड़ी की चौकी रखकर उस पर लाल या पीला कपड़ा बिछाएं.

शस्त्रों को रखें- अपने शस्त्रों, या आज के समय में चाकू, कैची, तलवार अथवा रक्षा के प्रतीक उपकरणों को अच्छे से साफ करके चौकी पर स्थापित करें.

गंगाजल से शुद्धिकरण- इसके बाद सभी शस्त्रों पर पवित्र गंगाजल छिड़ककर उन्हें पूरी तरह से शुद्ध और पवित्र करें.

तिलक और श्रृंगार- फिर शस्त्रों पर रोली, अक्षत, हल्दी, ताजे फूल और दूर्वा पूरी श्रद्धा के साथ अर्पित करें.

भोग और आरती- इसके बाद गुड़ और मिठाई का भोग लगाएं, धूप-दीप प्रज्वलित करें और भक्ति भाव से विधिवत आरती करें.

शुभकामना और प्रार्थना- पूजन संपन्न होने के बाद अपने गुप्त शत्रुओं पर विजय और समाज में शांति-सद्भाव की सच्चे मन से प्रार्थना करें.

सुख-सुरक्षा का आशीर्वाद- इस सरल और अचूक विधि से पूजन करने पर घर में हमेशा खुशहाली, सुख-समृद्धि और सुरक्षा का माहौल बना रहता है.



हिंदू धर्म में भगवान गणेश को प्रथम पूज्य देवता माना जाता है. किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत उनके नाम और पूजा से करना मंगलकारी माना जाता है. धार्मिक मान्यता है कि गणेश जी की आराधना करने से काम में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं और व्यक्ति को आगे बढ़ने का हौसला मिलता है. यही कारण है कि नए कारोबार की शुरुआत, दुकान के उद्घाटन, नए समझौते या किसी बड़े व्यावसायिक फैसले से पहले गणेश जी की पूजा की जाती है. लेकिन क्या आप जानते हैं कि कारोबार में सुख-समृद्धि और तरक्की की कामना के लिए गणेश जी की पूजा में कौन-से उपाय किए जा सकते हैं?

बिजनेस में बार-बार बिगड़ रहे हैं काम? बप्पा की पूजा में करें ये उपाय

बिजनेस में तरक्की के लिए गणेश जी की पूजा में करें ये उपाय!

गणेश जी को दूर्वा अर्पित करें धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान गणेश को दूर्वा बहुत प्रिय है. पूजा के दौरान बप्पा को दूर्वा अर्पित करना शुभ माना जाता है. मान्यता है कि इससे गणेश जी प्रसन्न होते हैं और भक्तों को सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं. कारोबार में तरक्की की कामना करते हुए आप गणेश जी को दूर्वा चढ़ा सकते हैं.

बुधवार को करें गणेश जी की पूजा



बुधवार का दिन भगवान गणेश को समर्पित माना जाता है. इस दिन सुबह स्नान करने के बाद स्वच्छ कपड़े पहनें और पूजा स्थल पर गणेश जी की प्रतिमा या तस्वीर के सामने दीपक जलाएं. इसके बाद फूल, दूर्वा और मोदक या लड्डू का भोग अर्पित करें. श्रद्धा के साथ

गणेश जी का ध्यान करें और कारोबार में आ रही परेशानियों को दूर करने की प्रार्थना करें.

बप्पा को मोदक या लड्डू का भोग लगाएं

भगवान गणेश को मोदक और लड्डू प्रिय माने जाते हैं. पूजा के दौरान अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार इनका भोग लगाया जा सकता है. मान्यता है कि बप्पा को प्रिय चीजों का भोग लगाने से उनकी कृपा मिलती है. पूजा के बाद प्रसाद परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों में बांट सकते हैं.

गणेश मंत्र का जाप करें

पूजा के दौरान भगवान गणेश के मंत्रों का जाप करना भी शुभ

माना जाता है. आप नियमित रूप से ? गं गणपतये नमः मंत्र का जाप कर सकते हैं. जाप करते समय मन को शांत रखें और अपने काम में आने वाली बाधाओं को दूर करने की प्रार्थना करें. नियमित पूजा से मन को एकाग्र रखने और सकारात्मक सोच बनाए रखने में भी मदद मिल सकती है.

कार्यस्थल पर रखें गणेश जी की तस्वीर

कई लोग अपने ऑफिस, दुकान या कारोबार के स्थान पर भगवान गणेश की तस्वीर या प्रतिमा रखते हैं. धार्मिक मान्यता के अनुसार, कार्यस्थल पर बप्पा का स्मरण शुभ माना जाता है. यदि

आप ऐसा करते हैं, तो पूजा के स्थान को साफ-सुथरा रखें और रोजाना कुछ समय प्रार्थना के लिए निकालें. तस्वीर या प्रतिमा ऐसी जगह रखें, जहां वह सुरक्षित रहे और कामकाज में बाधा न बने.

कारोबार में सफलता के लिए इन बातों का भी रखें ध्यान

धार्मिक आस्था के साथ-साथ कारोबार को व्यवस्थित तरीके से चलाना भी जरूरी है. यदि बिजनेस में लगातार नुकसान हो रहा है, तो सबसे पहले उसकी वजह समझने की कोशिश करें. खर्चों और आमदनी का हिसाब रखें, ग्राहकों की जरूरतों को समझें और किसी भी बड़े निवेश से पहले अच्छी तरह विचार करें.



20 अक्टूबर, मंगलवार को विजयादशमी यानी दशहरा का पावन पर्व बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाएगा. दशहरा के दिन रावण दहन देखने के लिए भारी भीड़ उमड़ती है और लोग जलते हुए पुतले को देखते हैं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि रावण दहन के बाद बची हुई राख को घर में रखना शुभ होता है या अशुभ? इस सवाल को लेकर ज्योतिषीय और धार्मिक मान्यताएं काफी स्पष्ट हैं. कई बार लोग जोश में आकर या अनजाने में इस राख को अपने साथ घर ले आते हैं, जो बाद में भारी मुसीबत का कारण बन सकता है. आइए इस लेख में विस्तार से जानते हैं कि रावण दहन के बाद बची हुई इस राख को संभालकर रखना चाहिए या इससे हमेशा दूरी बनाकर रखनी चाहिए.

रावण दहन के बाद राख रखना शुभ या अशुभ? जानिए क्या है इसकी ज्योतिषीय मान्यता



रावण दहन की राख

रावण दहन के बाद बची हुई राख

रावण को अधर्म, अहंकार और नकारात्मक ऊर्जा का सबसे बड़ा प्रतीक माना गया है. उसका पुतला जलाए जाने के बाद जो राख पीछे बच जाती है, उसे पूरी तरह से नकारात्मकता, विनाश और पतन का प्रतीक माना जाता है. ज्योतिष शास्त्र और वास्तु विज्ञान

के अनुसार, इस तरह की नकारात्मक ऊर्जा से जुड़ी किसी भी वस्तु को अपने घर के अंदर बिल्कुल भी नहीं लाना चाहिए.

अपना मूलांक जानें

अगर कोई व्यक्ति ऐसी राख को घर में लाकर रखता है, तो इससे घर की सुख-शांति भंग हो सकती है. इसके कारण परिवार के

सदस्यों के बीच मानसिक अशांति, कलह और लगातार दुर्भाग्य जैसी समस्याएं आने लगती हैं. यही वजह है कि अधिकांश विद्वान और ज्योतिषी आम लोगों को इसे घर में सुरक्षित रखने से साफ मना करते हैं.

गृहस्थ जीवन के लिए सख्त निषेध

कुछ विशेष तांत्रिक परंपराओं या विशिष्ट प्रकार के अनुष्ठानों में रावण दहन की इस राख का उपयोग शत्रु विजय पाने या कुछ खास साधनाओं को पूरा करने के लिए किया जाता है. लेकिन यह प्रक्रियाएं बहुत कठिन होती हैं और आम गृहस्थ जीवन के लिए यह पूरी तरह से वर्जित मानी गई हैं. एक आम परिवार या साधारण इंसान को इन सब चक्करों से दूर रहना चाहिए. कुल मिलाकर बात यह है कि सामान्य जनजीवन और घर की सुख-शांति बनाए रखने के लिए रावण दहन की राख को संभालकर रखना बेहद अशुभ माना जाता है. आपको अपने घर या पूजा स्थान के आसपास भी नहीं लाना चाहिए, वरना जीवन में मुश्किलें बढ़ सकती हैं.

अगर घर आ गई है रावण दहन की राख, तो करें यह काम

अगर आप अनजाने में

रावण दहन की राख को अपने घर ले आए हैं, तो आपको इसे तुरंत घर से बाहर किसी सुरक्षित और सुनसान जगह पर ले जाकर मिट्टी में दबा देना चाहिए. वास्तु और ज्योतिष के जानकारों के अनुसार इस राख को कभी भी इधर-उधर नहीं फेंकना चाहिए और इसे पैरों के नीचे आने से पूरी तरह बचना बेहद आवश्यक है.

दरअसल, पुतले को तैयार करने में कई तरह के हानिकारक केमिकल, बांस के तिनके और जहरीले रंग इस्तेमाल किए जाते हैं, जो स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों के लिए नुकसानदायक हो सकते हैं. इसके अलावा, इसे किसी भी पवित्र नदी में प्रवाहित करना भी धार्मिक रूप से बिल्कुल उचित नहीं माना जाता है. इसलिए इस राख को कचरे के डिब्बे में डालने के बजाय जमीन में सुरक्षित रूप से दबाना ही सबसे सही और समझदारी भरा उपाय है.

सोने की जीभ वाली काली मां! इस मंदिर में बक्से में बंद हैं सती की उंगलियां, पूजा के वक्त पुजारी भी ढकते हैं आंख!

आपने मां काली के कई मंदिरों के बारे में सुना होगा, जहां पूजा-पाठ की अलग-अलग परंपराएं और मान्यताएं देखने को मिलती हैं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि एक ऐसा मंदिर भी है, जहां मां काली की लंबी जीभ सोने की बनी है और माता सती के पैर की उंगलियों के अवशेष एक बक्से में सुरक्षित रखे जाते हैं? यहां साल में एक बार होने वाली विशेष पूजा के दौरान पुजारी भी अपनी आंखों पर पट्टी बांध लेते हैं. यह मंदिर अपनी प्राचीन मान्यताओं और अनोखी परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है.

दरअसल, हम बात कर रहे हैं पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में स्थित कालीघाट मंदिर की. इसे भारत के 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है. मान्यता है कि इसी स्थान पर माता सती के दाहिने पैर की उंगलियां गिरी थीं. हुगली नदी की एक छोटी सहायक धारा आदि गंगा के तट पर स्थित इस मंदिर में मां काली के दर्शन करने के लिए दूर-दूर से श्रद्धालु पहुंचते हैं. मंदिर से जुड़ी कई ऐसी मान्यताएं हैं, जो इसे दूसरे काली मंदिरों से अलग बनाती हैं. सोने की जीभ वाली मां काली की प्रतिमा

कालीघाट मंदिर में मां काली की प्रतिमा बेहद अनोखी है. यहां माता का त्रिनेत्र और लंबी स्वर्ण जीभ दिखाई देती है. प्रतिमा में माता के हाथों में खड्ग और नरमुंड भी हैं. मान्यता है कि इस प्रतिमा का निर्माण संत ब्रह्मानंद गिरि और आत्माराम गिरि ने किया था. बंगाल के दूसरे काली मंदिरों की तुलना में यहां माता का स्वरूप अलग माना जाता है. मंदिर में भक्तों को मां काली के चरणों के दर्शन नहीं होते, क्योंकि चरणों वाले स्थान पर काला पर्दा लगा रहता है.

बक्से में बंद हैं माता सती की उंगलियां

कालीघाट मंदिर की सबसे खास मान्यताओं में से एक माता सती के पैर की उंगलियों से जुड़ी है. मान्यता है कि इन पवित्र अवशेषों को मुख्य प्रतिमा के नीचे एक सुरक्षित बक्से में रखा गया है.



कालीघाट मंदिर का रहस्य

आम श्रद्धालुओं को इनके दर्शन की अनुमति नहीं होती. इन्हें देवी की मूल शक्ति के रूप में पूजा जाता है. साल में एक बार विशेष स्नान पूजा के दौरान इस बक्से को खोला जाता है और अवशेषों का विधि-विधान से स्नान कराया जाता है.

पूजा के समय पुजारी भी बांध लेते हैं आंखों पर पट्टी

मंदिर में सालाना स्नान पूजा की परंपरा बेहद खास मानी जाती है. इस दौरान मंदिर में विशेष अनुष्ठान किया जाता है और बक्से में रखे पवित्र अवशेषों को बाहर निकाला जाता है. मान्यता के अनुसार, इस अनुष्ठान में शामिल होने वाले चुनिंदा पुजारी अपनी आंखों पर कपड़ा बांध लेते हैं. वे अवशेषों को देखे बिना उनका पवित्र जल से स्नान कराते हैं. इसके बाद उन्हें नए वस्त्र में लपेटकर दोबारा सुरक्षित रख दिया



जाता है. यह परंपरा इस मान्यता से जुड़ी है कि इन अवशेषों को देखना वर्जित है.

कालीघाट मंदिर की पौराणिक कथा

पौराणिक मान्यता के अनुसार, जब भगवान शिव माता सती के पार्थिव शरीर को लेकर तांडव कर रहे थे, तब पूरे ब्रह्मांड को प्रलय से बचाने के लिए भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से माता सती के शरीर को कई टुकड़ों में विभाजित कर दिया था. इसी दौरान कालीघाट में माता सती के दाहिने पैर की उंगलियां गिरने की मान्यता है. इसी वजह से इस स्थान को शक्तिपीठ के रूप में विशेष महत्व दिया जाता है.

एक अन्य कथा के अनुसार, आत्माराम गिरि नाम के संत को भागीरथी नदी से प्रकाश की किरणें आती दिखाई दी थीं. वहां उन्हें मानव पैर के अंगूठे के आकार का एक पत्थर मिला. इसके पास ही नकुलेश्वर भैरव का स्वयंभू लिंग भी प्राप्त हुआ. इसके बाद इस स्थान पर विधिवत पूजा-अर्चना शुरू होने की मान्यता है.

कब बना था कालीघाट

मंदिर?

शुरुआत में कालीघाट मंदिर का स्थान एक छोटी झोपड़ी या कुटी के रूप में था. मंदिर के जीर्णोद्धार का संबंध 16वीं शताब्दी की शुरुआत में राजा मानसिंह से भी जोड़ा जाता है. वर्तमान मंदिर का निर्माण वर्ष 1809 में सबर्ण रॉय चौधरी परिवार द्वारा करवाया गया था. समय के साथ यह स्थान मां काली के प्रमुख धार्मिक स्थलों में शामिल हो गया.

कुंडूपकुर तालाब से भी जुड़ी है मान्यता

कालीघाट मंदिर परिसर के दक्षिण-पूर्व में कुंडूपकुर नाम का एक पवित्र तालाब स्थित है. मान्यता है कि इसका जल गंगा के समान पवित्र है. इसे संतान प्राप्ति का वरदान देने वाला भी माना जाता है. इस वजह से मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं के लिए इस तालाब का भी विशेष धार्मिक महत्व है.

कालीघाट मंदिर दर्शन का समय

कालीघाट मंदिर में दर्शन के लिए श्रद्धालु सुबह और शाम, दोनों समय पहुंच सकते हैं. मंदिर के दर्शन का समय इस प्रकार बताया जाता है-

सुबह- 5 बजे से दोपहर 2 बजे तक
शाम- 5 बजे से रात 10-30 बजे तक
पहली आरती- सुबह 4 बजे



‘हार्ट कंट्रोलर’ के साथ म्यूजिक इंडस्ट्री में उतरीं उर्वशी रौतेला खुद के लिखे गाने गाए

मुंबई । एक्ट्रेस उर्वशी रौतेला ने अपने ईडीएम (इलेक्ट्रॉनिक डांस म्यूजिक) ट्रैक ‘हार्ट कंट्रोलर’ के साथ म्यूजिक की दुनिया में कदम रखा, जिसमें उन्होंने मुख्य गायिका और लेखिका की भूमिका निभाई। अपने म्यूजिकल सफर के बारे में बात करते हुए उर्वशी ने आईएनएस को बताया कि वह लंबे समय से इलेक्ट्रॉनिक डांस म्यूजिक की ओर आकर्षित रही हैं और अपनी ऑन-स्क्रीन इमेज से हटकर इस जॉनर को आजमाना चाहती थीं। भारतीय संस्कृति और परंपरा को एक साथ लाता है। इस बारे में बात करते हुए ‘सनम रे’ की एक्ट्रेस ने कहा, ‘भारत की पहली बॉलीवुड ईडीएम सिंगर बनकर बहुत गर्व महसूस हो रहा है, जिन्हें एक फुल-लेंथ ईडीएम रिकॉर्ड/ट्रैक के लिए लीड वोकलिस्ट के तौर पर पेश किया गया है। किसी बॉलीवुड एक्ट्रेस के लिए यह पहली बार है और बॉलीवुड के इतिहास में भी ऐसा पहली बार हुआ है।



सूखापटा में मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान के तहत जिला स्तरीय शिविर आयोजित

शिविर में 153 आवेदन प्राप्त, पात्र हितग्राहियों को मौके पर मिला योजनाओं का लाभ

जिला पंचायत सीईओ ने किसानों से किया संवाद, अधिकारियों ने विभागीय स्टॉलों का निरीक्षण कर योजनाओं की प्रगति जानी



अधिकांश का मौके पर ही निराकरण किया गया।

मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान के तहत ग्राम सूखापटा में जिला स्तरीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में ग्रामीणों को शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई। साथ ही उनकी समस्याओं के निराकरण किया गया। पात्र हितग्राहियों को योजनाओं का लाभ दिलाने पर जोर दिया गया। शिविर में कुल 153 आवेदन प्राप्त हुए। इनमें से

अधिकारियों द्वारा विभिन्न शासकीय संस्थाओं का निरीक्षण किया गया। एसडीएम श्रीमती नवकिरण कौर ने शासकीय माध्यमिक विद्यालय एवं प्राथमिक विद्यालय जंगीपुर का निरीक्षण किया। उन्होंने आंगनवाड़ी केंद्र का भी जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान संबंधित व्यवस्थाओं की जानकारी ली गई।

किसानों से संवाद कर दी जे-फॉर्म की जानकारी जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री सोजान सिंह रावत ने किसानों से संवाद कर जे-फॉर्म

के संबंध में जानकारी ली और उन्हें इसके महत्व एवं उपयोगिता के बारे में समझाया। जे-फॉर्म (J-Form) मंडियों में किसानों द्वारा बेची गई कृषि उपज (फसल) की एक आधिकारिक बिक्री रसीद (Sale Receipt) होती है।

विभागीय स्टॉलों का निरीक्षण, आयुष्मान कार्ड की प्रगति जानी

शिविर में लगाए गए विभिन्न विभागों के स्टॉलों का निरीक्षण कर अधिकारियों से योजनाओं की प्रगति की जानकारी ली गई। इस

दौरान आयुष्मान कार्ड भी बनाए गए। अधिकारियों ने ग्रामीणों को विभिन्न शासकीय योजनाओं की पात्रता एवं लाभ प्राप्त करने की प्रक्रिया से अवगत कराया।

उद्यमियों एवं लखपति दीदियों से हुआ संवाद

शिविर में उद्यम संवाद और लखपति दीदी संवाद का आयोजन किया गया। लखपति दीदी संवाद के दौरान श्रीमती अनीता जाटव सहित अन्य लखपति दीदियों ने अपने अनुभव साझा किए। संवाद के माध्यम से स्वरोजगार, आजीविका संवर्धन और आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए संचालित योजनाओं की जानकारी दी गई। शासकीय योजनाओं का लाभ उठाकर सफलतापूर्वक अपना उद्यम संचालित कर रहे उद्यमियों ने अपनी आत्मनिर्भरता की गाथा साझा की। इन उद्यमियों में मुद्रा योजना से लाभान्वित सर्वश्री कामताप्रसाद साहू, अवतार कुशवाह व ऐलान गुर्जर, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना से

लाभान्वित श्री सूरज कर्ण व श्री महेन्द्र सिंह परिहार, उद्यम क्रांति योजना से लाभान्वित श्री प्रवेन्द्र सिंह बघेल व श्री आकाश शाक्य, संत रविदास योजना से लाभान्वित श्री मनोज राजौरिया एवं आचार्य विद्यासागर योजना से लाभान्वित श्री राजेश पटसरिया शामिल हैं।

पात्र हितग्राहियों को मौके पर मिला लाभ

शिविर में हितग्राहियों को शासकीय योजनाओं का लाभ प्रदान करने की कार्यवाई की गई। इस दौरान श्री चुनिया आदिवासी को पीएम जन-मन आवास योजना का लाभ दिया गया, जबकि श्री ब्रजकिशोर को दिव्यांग प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। इसी तरह लखपति दीदियों को सहायता राशि वितरित की गई। इसके अलावा लाडली लक्ष्मी योजना के प्रमाण-पत्र भी वितरित किए गए। श्रीमती नीतू दीपक बघेल को अनुग्रह सहायता योजना के तहत 2 लाख रुपये की आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई गई।